सितम्बर-अक्टूबर, 2021

बच्चों की रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री से परिपूर्ण पत्रिका

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

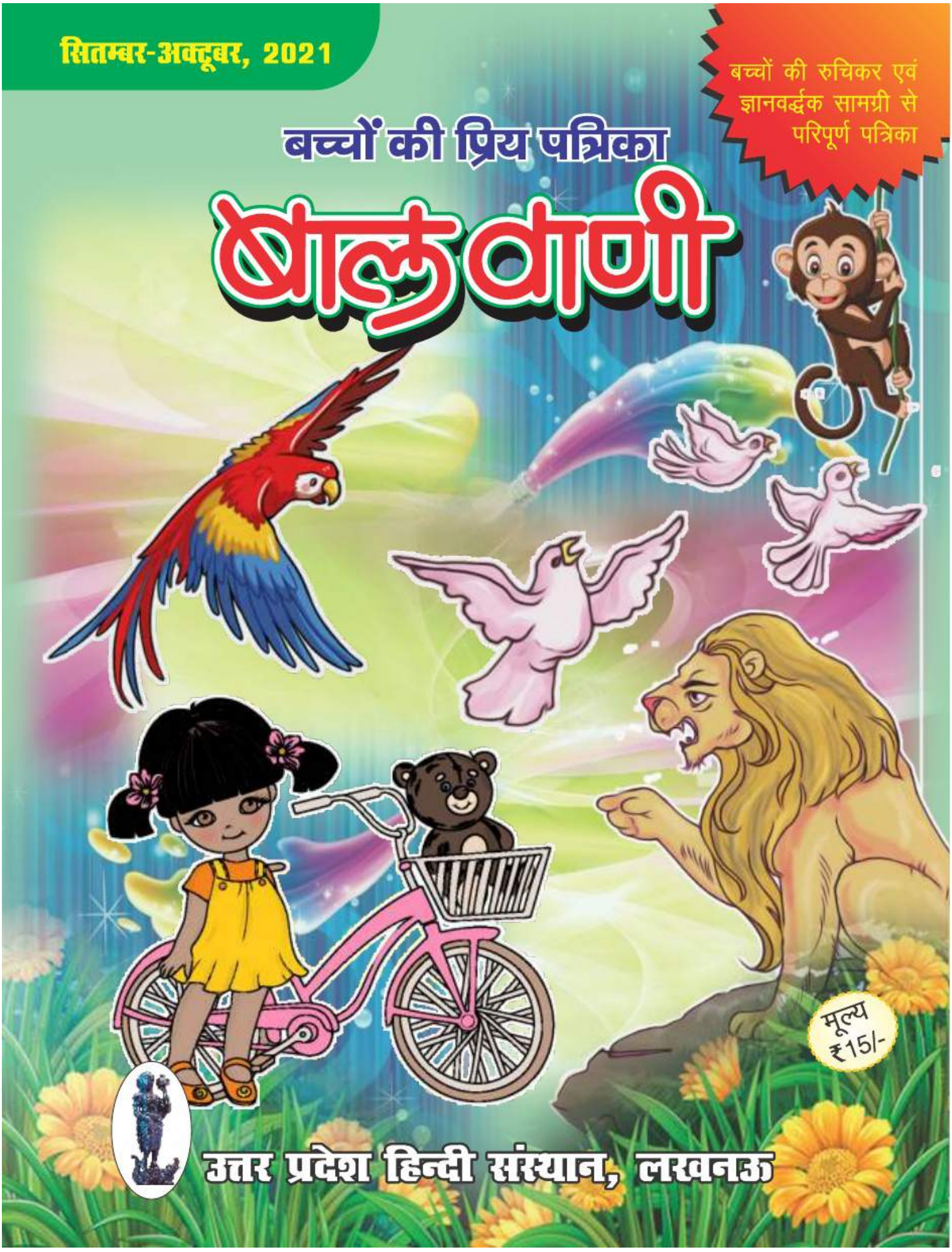

मूल्य ₹15/-

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

स्मरण

लाठी का घोड़ा

सुमित्रानन्दन पंत

छुटपन में मुझको प्रिय था लाठी का घोड़ा,
उसने तब से मेरा साथ नहीं है छोड़ा।
उसको कभी लगाना पड़ा न कस कर कोड़ा,
आँगन में भागता स्वयं वह ढीठ निगोंड़ा।
घोड़ा कहिए, वायुयान या उसको हाथी,
ऊपर नीचे मुझे घुमाना जीवन साथी।
घुसता वह मुझको ले मन के गहन वनों में,
संघर्षों के खन्दक करता पार क्षणों में।
रजत प्रसारों में आत्मा के मुझे उड़ाता,
शोभा का वैभव मेरे उर में भर जाता।

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

सितम्बर–अक्टूबर, 2021 वर्ष–22, अंक–5

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

मुख्य सम्पादक
डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त

प्रबन्ध सम्पादक
श्री पवन कुमार

सम्पादक
डॉ. अमिता दुबे

सहायक सम्पादक
श्याम कृष्ण सक्सेना

कला सज्जा
रजनी श्रीवास्तव

बालवाणी
सदस्यता शुल्क
प्रति अंक 15.00
वार्षिक 80.00
आजीवन 1000.00

प्रकाशक : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग, हज़रतगंज, लखनऊ-226001 दूरभाष : 0522-2614470-71
ई-मेल : balwanipatrika@gmail.com, वेबसाइट : www.uphindisansthan.in
मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्रथम तल, शगुन पैलेस, सप्रू मार्ग, लखनऊ-01। टोल फ्री नं. : 1800 180 5304

बालवाणी सदस्यता शुल्क : प्रति अंक : 15.00, वार्षिक : 80.00, आजीवन : 1000.00

बापू

सोहनलाल द्विवेदी

सिर पर धर खादी का टुकड़ा,
कस कर कमर लंगोटी।
बापू कहाँ चल पड़े बोलो,
लिये लकुटिया छोटी।

एक ओर तो बा चलती है,
कौन दूसरी ओर।
अच्छा मैं पहचान गया यह,
भैया नन्द किशोर।

सभी लोग तुम तक आते हैं,
तुम न कहीं क्यों जाते।
बापू इसका भेद बताओ,
तुम तो भेद छिपाते।
बापू तुमको सभी मानते,
दुनिया शीश झुकाती।

बापू काम कर चुके,
आओ चलकर पतंग उड़ायें।
मैं ले लूँगा रील चलो,
कनकइया कहीं लड़ायें।

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

सम्पादकीय

प्रिय बच्चो,

कोरोना के प्रकोप से देश अभी पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया हैं। कोराना पूर्व की तरह गतिविधियाँ अभी सामान्य नहीं हुई हैं। शैक्षणिक सत्र भी अभी पूरी तरह आरम्भ नहीं हो पाये हैं। लेकिन विश्वास है कि शीघ्र ही देश कोरोना मुक्त हो जायेगा। इसका सबसे बड़ा कारण है टीकाकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया जाना। 54 करोड़ से अधिक लोगों को टीका लगाया जा चुका है। आशा है, देश के सभी लोगों को टीका शीघ्र ही लगाया जा सकेगा। हमें निराश नहीं होना है, वरन सावधानी बरतनी है। यह प्रकृति का नियम है कि रात्रि के बाद सबेरा होता ही है। छायावाद के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद की पंक्तियाँ ध्यान में आती हैं -

दुखः की पिछली रजनी बीच,
विकसता सुख का नवल प्रभात।

हम आशा कर सकते हैं कि देश कोराना को पूरी तरह पराजित कर लेगा।

देश स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। पूरे देश में स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। यह स्वतंत्रता दिवस हमें उन महान् स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाता है जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान किया। देश उनका ऋणी है। पराधीनता मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। पराधीनता मनुष्य को कुंठित करती है। इसलिए जिन हुतात्माओं ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया देश उनका कृतज्ञ है। यह हमारा दायित्व है कि हम इस स्वतंत्रता की रक्षा करें।

स्वतंत्रता के चौहत्तर वर्षों में देश ने अनेक क्षेत्रों में

प्रगति की है, पर अभी भी गंतव्य दूर है। हमें देश को परम वैभव के शिखर तक पहुँचाना है। इसके लिए जरूरी है कि हम एकजुट होकर प्रयास करें। अभी भी जो बुराइयाँ हमारे भीतर विद्यमान हैं उन्हें निकाल बाहर फेंक दें।

हमारी शिक्षा व्यवस्था में बहुत सी कमियाँ हैं। आरंभ से ही हमारे भीतर अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति जो गर्व का भाव जागृत होना चाहिए था, वह पूरी तरह नहीं हो पाया है। शिक्षा पूरी तरह से मातृभाषा में नहीं दी जा रही है, जबकि विश्व के भाषा शास्त्री और मनोविज्ञानी इस बात पर एकमत हैं कि स्वभाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए। विशेषकर आप बच्चों को अपनी भाषा में ही आरंभिक शिक्षा मिलनी चाहिए। इससे आप की धारणा शक्ति मजबूत होगी। यह प्रसन्नता का विषय है कि नयी शिक्षानीति 2020 में मातृभाषा पर विशेष बल दिया गया है। आशा है, यह पूरे देश में लागू होगी और ग्रामीण अंचल के बच्चों की प्रतिभा निखर कर सामने आयेगी। शिक्षा ही विकास की कुंजी है। आज विकसित कहे जाने वाले देश बौद्धिक सम्पदा के कारण ही आगे बढ़े हैं। अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करके देशवासी अपनी प्रतिभा का विकास कर सकेंगे।

अन्य अंकों की तरह इस अंक में भी आपकी रुचि के अनुकूल कहानी, कविताएँ तथा ज्ञान विषयक सामग्री दी गयी है। आशा है, यह अंक भी आपको रुचिकर लगेगा। हम आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में रहेंगे। आप अपने लक्ष्य की ओर बढ़े इन्हीं कामनाओं के साथ,

आपका

सदानन्दप्रसाद गुप्त

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

सितम्बर–अक्टूबर, 2021 | वर्ष-22, अंक-5

अनुक्रम

स्मरण

लाठी का घोड़ा	सुमित्रानन्दन पंत	आवरण-2
बापू	सोहनलाल द्विवेदी	2

धरोहर

बनिए के बेटे की कथा	आचार्य विष्णु शर्मा	7

धारावाहिक उपन्यास

घर उड़ा आकाश	क्षमा शर्मा	11

कहानी

चिट्ठी कौन लिखे	संजीव जायसवाल संजय	16
देर से समझ	डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल	24
हरीमन तोता	अखिलेन्द्र तिवारी	27
असली-नकली चेहरा	नयन कुमार राठी	30
चला चला, मैं ये चला	डॉ. बानो सरताज	42
जैसा साथ, वैसी सोच	तन्मय द्विवेदी	47
मिट्ठू की आजादी	श्याम नारायण श्रीवास्तव	50
बन्दर की चतुराई	सुरेन्द्र श्रीवास्तव	67

कविता

साइकिल	गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'	10
चिड़ियों की रानी	शशि गोयल	32
ठंडी छाँव	निर्मल 'प्रेमी'	33

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

बच्चों की प्रिय पत्रिका

बालवाणी

द्वैमासिक

सितम्बर–अक्टूबर, 2021 | वर्ष-22, अंक-5

अनुक्रम

यही मंत्र है खास	सीताराम गुप्ता	39
डाक टिकट	जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	40
सुबह-सुबह	डॉ. नुसरत नाहीद	54
आत्मविभोर	युगल किशोर शर्मा	61
उन राहों पर	डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'	62
शाम का खेल	जसविंदर शर्मा	66

चित्रकथा

वन और हम	रजनी श्रीवास्तव	35

ज्ञानवर्द्धक लेख

फौलादी गुड़िया	विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी	55
हमारा स्वभाव	नमन गोगिया	63

बच्चों की कलम से

पहेलियाँ	बेचू कुमार	72

विविध

वर्ग पहेली	सुबोध कुमार दुबे	34

बच्चों की तूलिका

चित्र-1	काजल श्रीवास्तव	आवरण-3
चित्र-2	अनुष्का शर्मा	आवरण-3
चित्र-3-4	स्मृति पाल	आवरण-3

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

बनिए के बेटे की कथा

आचार्य विष्णु शर्मा

हिरण्यक ने कौए और कछुए को आगे की कथा सुनायी।
– सम्पादक

एक शहर में एक बनिया रहता था। उसका नाम सागरदत्त था। उसके बेटे ने सौ रुपये की एक पुस्तक खरीदी। उसमें एक श्लोक था। उसका अर्थ था मनुष्य पाने योग्य वस्तु ही पाता है, देव भी उसमें बाधित नहीं हो सकता। अतः न तो मैं दुख करता हूँ और न विस्मय क्योंकि जो वस्तु हमारी है, वह दूसरे की नहीं हो सकती।

पुस्तक देखकर सागरदत्त ने अपने बेटे से पूछा कि 'यह पुस्तक कितने में खरीदी?'

बेटे ने बताया, 'एक सौ रुपयों में।'

'मूर्ख कहीं का। धिक्कार है तुझे।' बनिया बिगड़ पड़ा, 'यदि तू एक श्लोक का सौ रुपए देता है तो तू जीवन में कभी भी धन उपार्जन नहीं कर सकता। निकल जा मेरे घर से मूर्ख।'

बाप की फटकर सुनकर वह परदेस चला गया। वह वहाँ रहने लगा। कोई भी उससे पूछता कि तुम कहाँ से आये हो तो वह एक ही उत्तर देता – मनुष्य प्राप्तव्य धन पाता है। . . . हर एक को एक ही उत्तर। उसका नाम 'प्राप्तव्यमर्थ' पड़ गया।

एक दिन उसी नगर में उत्सव था। वहाँ की राजकुमारी उत्सव देखने नगर में गयी। मार्ग में घूमते-घूमते उसने एक अतीव मनमोहक व रूपवान राजकुमार को देखा। उसे देखते ही वह उस पर मुग्ध हो गयी। वह उसे मिलना चाहती थी।

उसने अपनी सखी को भेजा। सखी ने तुरन्त उसके पास जाकर कहा, 'मुझे मेरी स्वामिनी राजकुमारी चन्द्रावती ने भेजा है। उसने आपको अपने महल में आने का आमंत्रण दिया है। यदि आप नहीं गये तो वह वियोग में मर जायेगी।'

'पर मैं वहाँ जाऊं कैसे?'

'वे अपनी खिड़की में से रस्सी लटका देंगी। आप उसके सहारे ऊपर चढ़ जाइए।'

राज-पुत्र ने स्वीकृति तो दे दी पर जब वहाँ जाने का समय हुआ तो उसने सोचा कि यह तो गलत काम है, अपयश दिला सकता है। . . . बस, वह नहीं गया।

इधर प्राप्तव्यमर्थ भटकता-भटकता उधर से गुजरा। उसने रस्सी लटकती देखी तो वह ऊपर चढ़ गया। राजकुमारी ने उसे राजकुमार समझकर आदर-सम्मान किया। खूब सजी-संवरी और कहा, 'मैंने तुम्हें अपने को समर्पित कर दिया है। अब मन में तेरे सिवाय मेरा कोई पति नहीं होगा।'

उसने सदैव की तरह कहा, 'प्राप्तव्यमर्थ लभते मनुष्यः।'

राजकुमारी को झटका लगा। वह समझ गयी कि यह कोई अन्य पुरुष है। उसे जाने को कह दिया। बनिया-पुत्र किसी मंदिर में जाकर सो गया।

थोड़ी देर बाद वहाँ विनयवती आयी उसने उसे ही अपना प्रेमी समझा और बोली, 'अब तो बातें करो।' उसने कहा - 'प्राप्तव्यमर्थ लभते मुनष्यः।' विनयवती ने सोचा कि 'जो बिना विचारे तथा जल्दबाजी में काम करता है, उसका यही फल होता है।'

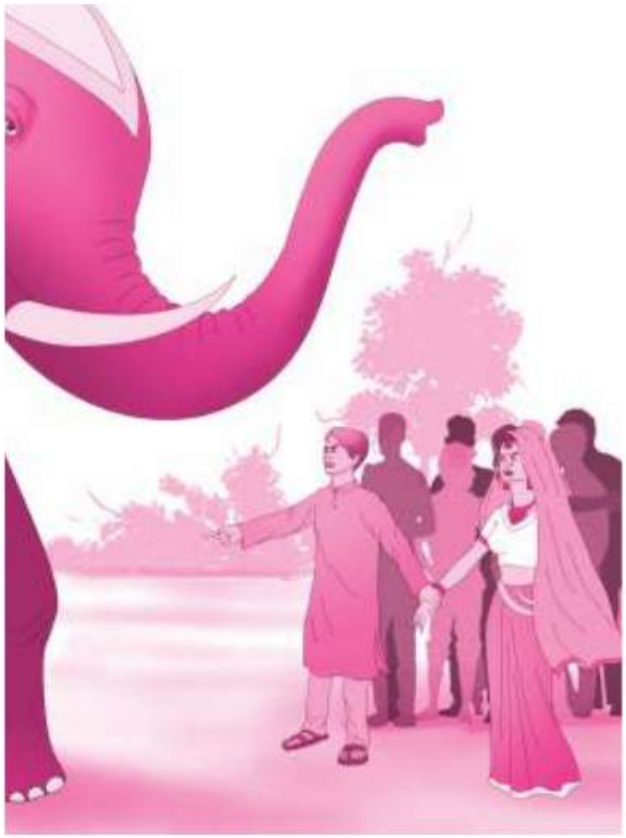

उसने उसे निकाल दिया। वह जा रहा था। तभी उसे सामने बारात आती हुई दिखायी दी। वह भी उसमें शामिल हो गया। बारात लड़की वालों के घर पहुँची। वधू मांगलिक वस्त्र पहने बैठी थी। वन्दनवार बंधे थे। उसी समय बारात में शामिल हाथी महावत को गिराकर बेकाबू हो गया कई बारातियों को घायल करता हुआ जब वह दुल्हन के पास गया तो प्राप्तव्यमर्थ ने उस बड़ी-बड़ी आँखों वाली दुल्हन का दाहिना हाथ पकड़कर कहा, 'मैं तुम्हारा रक्षक हूँ। जरा भी मत डरो।' उसने हाथी को जोर से धमकाया। संयोग से हाथी लौट गया। तभी बाराती लौटे। दुल्हन का पिता लौटा। वरकीर्ति आया। उसने दुल्हन के हाथ को प्राप्तव्यमर्थ के हाथ में देखकर अपने ससुर को कहा, 'आपने अपनी बेटी का हाथ इनके हाथ में कैसे दे दिया।'

बेटी के बाप ने कहा, 'मैं भी तुम्हारे साथ-साथ यहाँ आया हूँ। इसके पूर्व क्या हुआ, मुझे नहीं मालूम।' फिर उसने अपनी बेटी से पूछा तो उसने बताया, 'हाथी के भय से सभी लोग भाग गये पर इस वीर-पुरुष ने मेरे प्राणों की रक्षा अपने प्राणों को संकट में डालकर की। अब मैं इसे ही अपना पति मानूंगी।'

लम्बा विवाद चला। रात बीत गयी पर लड़की ने उसे ही अपना पति मान लिया।

सुबह होते ही नगर के समस्त महाजन इकट्ठे हुए। इस बात को सुनकर राजकन्या, विनयवती, दण्डनायक की बेटी आदि सभी आ गए, राजा भी।

उसने प्राप्तव्यमर्थ से पूछा, 'सच-सच बता कि बात क्या है?'

प्राप्तव्यमर्थ ने कहा, 'प्राप्तव्यमर्थ लभते मनुष्यः।'

राजकन्या ने कहा, 'देवोऽपि तं लंघयितुं न शक्यः।'

दंडनायक की बेटी ने कहा, 'तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे।'

बनिये की बेटी बोली, 'यदस्म दीयं न हि तत् परेषाम्।'

श्लोक पूरा हो गया। उस राजा ने सबके बयान सुने। वास्तविकता जानकर राजा ने प्राप्तव्यमर्थ को अपार धन, दास-दासियां और एक हजार गांव देकर अपनी पुत्री का विवाह कर दिया और कहा, 'यह हमारा पुत्र है।' दंडनायक ने भी अपनी शक्ति अनुसार धन दिया।

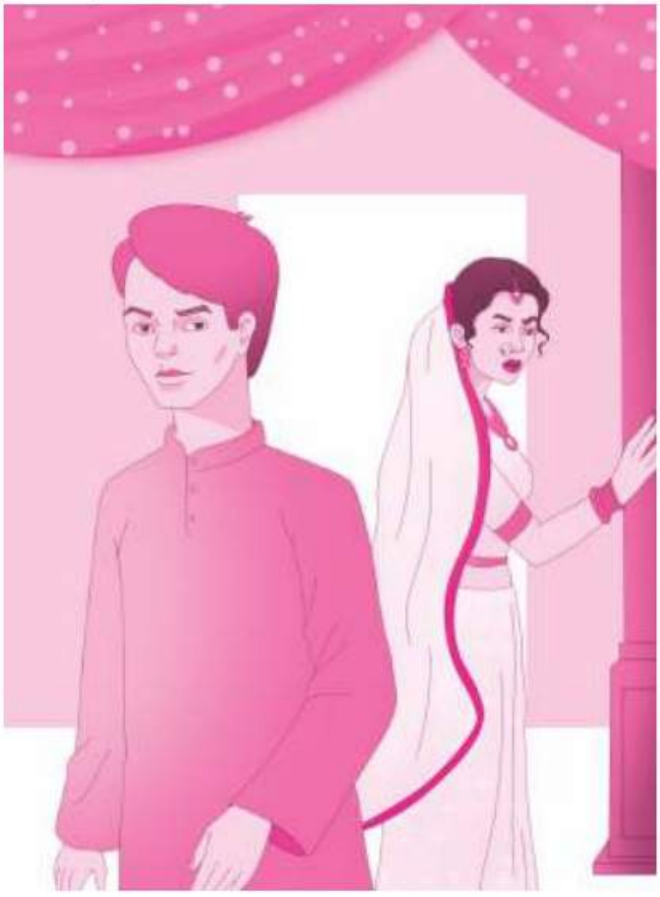

राजा ने जब प्राप्तव्यमर्थ को युवराज पद दे दिया तो उसने अपने सारे कुटुम्बीजनों को बुला लिया। उसके पिता को अपने पुत्र पर गर्व हुआ।

हिरण्यक ने कहा, 'मैं लम्बे अनुभवों से गुजरकर मित्र के साथ यहाँ आया हूँ। मेरे अनमने रहने व पलायन का यही कारण है।'

मंथरक ने कहा, 'यह कौआ वास्तव में तेरा मित्र है। यदि इसकी नीयत खराब होती तो यह रास्ते में ही तुझे खा जाता। . . . तू मेरे यहाँ ही रह। सरोवर की पाल पर घर बना ले। तुझे

अपना घर छोड़ना पड़ा, इसका दुख न कर। हर सुखद वस्तु का उपभोग चंद दिनों के लिए ही होता है। . . . यहाँ सुख से रह। अक्लमंद आदमी के लिए क्या देश, क्या परदेस। जहाँ भी वह रहेगा, वहाँ अपनी बुद्धि से सुख संचय कर लेगा जैसे सिंह किसी भी जंगल में जाकर अपना वर्चस्व स्थापित कर लेता है। धन यदि भाग्य में नहीं लिखा होता है तो वह नष्ट हो जाता है। जैसे घने वन में पहुँचकर सोमिलक जिस तरह दिशा भटक गया, उसी तरह धन भाग्य में न लिखा हो तो नष्ट हो जाता है।'

'वह कैसे?'

मंथरक कहने लगा।

- क्रमशः (पंचतंत्र से साभार)

कविता

साइकिल

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

मेरी प्यारी है साइकिल।
सरल सवारी है साइकिल।
जाओ कहीं बड़ी दे राहत,
पूरी हो फिटनेस की चाहत,
बचत समय की करवाती,
बिना किराया पहुँचाती,
बड़ी दुलारी है साइकिल।
कभी-कभी बस हवा भराना,
ईंधन पड़ता नहीं डलाना,
सर सर चल, दे रही मजे
टन-टन घंटी खूब बजे,
रेस न हारी है साइकिल।

भीड़भाड़ में रखता ध्यान,
दाएँ-बाएँ देता कान,
कोरोना से करे बचाव,
रखती शारीरिक अलगाव,
मेरी न्यारी है साइकिल।
मेरी प्यारी है साइकिल।

117, आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ-226022 मोबाइल : 9956087585

घर उड़ा आकाश

क्षमा शर्मा

एक शाम चाचा जा रहे थे। बस्तियां खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थीं। उन्हें लग रहा था कि इतनी घनी आबादी में दम घुट जाएगा। वह बुदबुदाए-यह मोहल्ले कब खत्म होंगे। मैं कब खुली हवा में सांस लूंगा। और यह क्या हुआ? एकाएक सार बस्तियां खत्म हो गईं। और जंगल शुरू हो गया। लम्बे-लम्बे पेड़ों से भरा। जहां हाथ को हाथ सुझाई न दे।

चाचा बढ़े चले जा रहे थे। चले जा रहे थे। जंगल बढ़ता जा रहा था और उसके साथ अंधेरा भी। उन्हें घबराहट सी हो रही थी। ऐसा लग रहा था कि जंगल से कोई जानवर निकलेगा और इस अंधेरे में उनका काम तमाम कर देगा। उन्होंने सोचा कि किसी पेड़ पर चढ़ जाएं और रात काट दें। उन्होंने साइकिल एक पेड़ के नीचे खड़ी की और पेड़ पर चढ़ने लगे। अब क्या पेड़ पर चढ़ते जाएं और उसका सिरा ही न मिले। ऐसा लगा कि सब कुछ बहुत नीचे रह गया है और वह पेड़ पर चढ़ते-चढ़ते आसमान तक आ पहुँचे हैं। उन्हें लगा कि अगर पास में टॉर्च होती तो कितना अच्छा रहता।

तभी उन्हें सुनाई दिया-टॉर्च का क्या करते। मेरी आंखें हैं न। इनसे देखो, तुम्हें सब कुछ दिख जाएगा। और चाचा ने देखा पास ही दो चमकीली आंखें उन्हें घूर रही हैं।

वह डर से थर-थर कांपने लगे। कौन है जो उनके मन की बातें भी समझ रहा है। क्या पता कोई भूत-प्रेत हो, कोई जहरीला नाग हो या कोई आसमानी आफत।

अरे मुझे नहीं पहचानते। मैं तो तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ और तुम मुझसे डर रहे हो। डरने की कोई बात नहीं है।

लेकिन तुम हो कौन?-चाचा ने अपनी घबराहट को छिपाते हुए कहा।

मैं? पहचानो। वैसे तो बच्चों को कहानियां सुना-सुनाकर खूब कल्पना की दुनिया में ले जाते हो और मुझे नहीं पहचानते?

दिन होता तो शायद पहचान भी लेता। रात है न और मैं जंगल में अकेला हूँ। च.च.च. चाचा ने जुबान काटी। पता नहीं कौन चोर-डाकू हो और उसको बताए दे रहे हैं कि अकेला हूँ।

मुझे पता है तुम अकेले हो और किसी ने बुलाया है तुम्हें।

अब तो चाचा को काटो तो खून नहीं। कौन है ये। जो बात सिवाय उनके और बुलाने वाले के किसी और को

पता नहीं है, यह बता रहा है।

बता भी दो भाई तुम कौन हो, जो इस तरह अंतर्यामी की तरह बात कर रहे हो।

मैं....अचानक जंगल में हँसी गूंजी-मैं इस जंगल का जिन्न हूँ। लाखों सालों से इस जंगल में अकेला रहते-रहते ऊब गया हूँ। तुम्हें देखा तो तुमसे बतियाने का मन करने लगा।

जिन्न...जंगल के। क्या मतलब? शहर के जिन्न अलग होते हैं और जंगल के अलग? चाचा हँसने से रुके। वह डर भी रहे थे और हँस भी रहे थे। क्या पता जिन्न किस बात का बुरा मान जाए और उनका काम तमाम कर दे।

और क्या? शहर के जिन्न जलते हैं हमसे। बहुत से मेरे रिश्तेदार शहरों में रहते हैं। अब तो उनके रहने के लिए वहां न पेड़ बचे हैं और न खाली मकान ही। सब जगह इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें बन गई हैं। बेघर हो गए हैं बेचारे। जैसे-तैसे अपना वक्त काट रहे हैं। मेरे पीछे पड़े रहते हैं कि जंगल में कोई पेड़ और काम दिलवा दूं। मगर मैं उनसे दूर रहना चाहता हूं। शहर में रह-रहकर उनकी आदतें बिगड़ गई हैं। बहुत आराम तलब हो गए हैं। फिर हमेशा दूसरों को तंग करने की जुगत भिड़ाते रहते हैं, जो मुझे कतई पसंद नहीं है।

तो जिन्न भाई मुझसे क्या चाहते हो? मैं आपके किस काम आ सकता हूँ। मैं न तो कोई जादू जानता हूं न कोई और बात। मैं तो बस साधारण सा एक आदमी हूँ, जो बच्चों के बीच में बहुत खुश रहता हूँ।

मुझे तुम से कुछ नहीं चाहिए। रात बहुत हो गई है। तुम यहां आराम से सोओ। जब सवेरे निकलो तो मुझे भी अपने साथ लिए चलना।

मेरे साथ चलकर तुम क्या करोगे?

कुछ नहीं। मैं भी तुम्हारे साथ-साथ घूम लूंगा। तुम्हारा साथ हो जाएगा और मुझे भी एक इंसान साथी के रूप में मिल जाएगा। शेर, चीतों, बाघ, तेंदुओं को साथी बनाते-बनाते थक चुका हूँ।

तुम तो अच्छे वाले जिन्न दीखते हो। डरते नहीं लोग तुमसे। चाचा ने जिन्न से पूछा। अभी तक उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सचमुच किसी जिन्न से बातें कर रहे हैं। वह भी अच्छा वाला जिन्न।

पहले बहुत डरते थे। जब मुझे भी दूसरों को डराने, उनका नुकसान करने में बहुत आनंद आता था। मगर अब मैंने किसी का नुकसान करना और डराना छोड़ दिया है। किसी को डराने से फायदा ही क्या है। अब मुझे प्यार का मतलब समझ में आ गया है। प्यार दो और प्यार पाओ। नफरत से जैसे नफरत मिलती है, वैसे ही प्यार से प्यार मिलता है। जिन्न ने कहा तो चाचा की हिम्मत बढ़ी। धीरे से बोले- बड़ी भूख लगी है मुझे।

अरे यह तो मैं भूल ही गया था। अभी लो-कहते हुए जिन्न ने अचानक न जाने क्या किया कि

चाचा के आसपास रोशनी हो गई। आसपास का सब कुछ साफ-साफ दिखाई देने लगा। पेड़ पर बैठे पक्षी फड़फड़ाने लगे।

अचानक चाचा के सामने परोसी हुई पत्तल आ गई। क्या नहीं था उसमें। पूरी-कचौरी, सब्जी, दही, लड्डू, बर्गर, नूडल्स, चॉकलेट्स। अचानक ही एक थैला उड़ता-उड़ता आया उसमें कई तरह के जूस, शर्बत और सॉफ्ट ड्रिंक्स थे।

चाचा की दादी कहती थीं कि किसी पराए का दिया खाना नहीं खाना चाहिए। और मिठाई तो कतई नहीं। पता नहीं क्या मिला हो? लेकिन अब क्या करें। अगर खाना नहीं खाएंगे, तो जिन्न उनसे नाराज हो जाएगा। और क्या पता नाराजगी में वह कब बुरा जिन्न बन जाए और चाचा का राम नाम सत्य हो जाए।

चाचा ने कहा-भाई तुम तो बड़े अच्छे दोस्त निकले। मगर अकेला खाता, क्या मैं अच्छा लगूंगा। तुम भी खाओ।

तभी चाचा की सिसकियां सुनाई दीं-तुम इंसान हमारी तकलीफ क्या जानो। अगर मनुष्यों की तरह खा-पी सकते तो क्या जिन्न कहलाते। तुम ही खाओ और आराम से सोओ। रात भर कोई तकलीफ नहीं होगी। इस पेड़ की खोखल में बहुत बड़ा नाग रहता है, बड़ा जहरीला है। मगर मेरे होते, तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा।

नाग का नाम सुनते ही चाचा की तो घिग्घी बंध गई। अब क्या करें। पेड़ पर सोना वो भी नाग के पास। हाथ की पूरी हाथ में ही रह गई। कहीं वह सोएं और नाग उन्हें अपनी लपेट में ले ले। यहां जंगल में किसको पुकारेंगे।

जिन्न ने उन्हें घबराते देखा तो बोला-जब मैंने कह दिया कि डरने की कोई जरूरत नहीं, तो नहीं। बस खाकर आराम से सो जाओ। मरते क्या न करते। चाचा ने खाना खाया और अधलेटे हो गए। यहां कौन सा अपना घर था या गुदगुदा बिस्तर था। बस भगवान का नाम लेते रात कट जाए। लेकिन यह क्या चाचा को लगा जैसे उनके सिरहाने किसी ने नरम तकिया लगा दिया है। वह गद्दे पर सो रहे हैं। कुछ ही देर में जिन्न और नाग का डर रफूचक्कर हो गया और वह जोर से खर्राटे भरने लगे।

सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से उनकी नींद खुली। आसपास देखा, तो इतना घना जंगल था कि सूरज दिखाई ही नहीं दे रहा था। और नीचे देखा तो उनके होश उड़ गए। उनकी साइकिल से एक बहुत ही लम्बा नाग लिपटा था। अब क्या करें? नीचे कैसे उतरें। जिन्न ने तो कहा था कि नाग

उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अब जिन्न कहां है।

वह सोच ही रहे थे कि उन्हें आवाज सुनाई दी-बिना डरे नीचे उतर आओ। जरूर जिन्न ने उनकी बात जान ली थी। वह धीरे-धीरे नीचे उतरे। नाग ने फन उठाकर उन्हें देखा और फन नीचे कर लिया। सवाल यह था कि जिस तरह से वह साइकिल से लिपटा था, वह उसे चलाएं कैसे। पैडल पर पैर रखते, तो नाग उन्हें डस सकता था। वह दूर खड़े इंतजार कर रहे थे कि नाग हटे तो वह जाएं। अचानक नाग साइकिल से हटा और पेड़ पर चढ़ने लगा। अच्छा तो शायद यह बेचारा रात भर अपनी खोखल में गया ही नहीं। जिन्न ने सांप को ऐसी क्या पट्टी पढ़ाई कि बेचारा रात भर अपने घर से बाहर रहा। चाचा ने मन ही मन जिन्न को धन्यवाद दिया और साइकिल पर बैठकर चल दिए। मगर जिन्न को उनके साथ जाना था। वह कहां है? वह उसे देखना चाहते थे। आज तक उन्होंने किसी जिन्न को नहीं देखा था।

'जब समय आएगा, तुम मुझे देख भी लोगे। वैसे मैं तुम्हारे साथ ही हूँ। यों मुझे देखकर क्या करोगे? मैं इतना सुंदर भी नहीं हूं कि कोई मुझे देखना चाहे।' चाचा को सुनाई दिया। उन्होंने इधर-उधर देखा मगर जिन्न उन्हें कहीं नहीं दिखा। वह जंगल में आगे बढ़ते रहे। कि रास्ते के सामने एक चौड़े पाट वाली नदी दिखाई दी। सब तरफ सुनसान था। दूर-दूर तक कोई नाव भी दिखाई नहीं दे रही थी।

वह आँखों से नदी की गहराई नापने की कोशिश कर रहे थे उसे कैसे पार करें। बचपन में जरूर अपने गांव की नदी में तैरते थे। पर जब से शहर में रहने लगे थे, कभी तैरे ही नहीं थे।

तभी एकाएक तेज हवा का झोंका आया और अचानक साइकिल नदी में गिर पड़ी और यह क्या, वहां साइकिल न होकर नाव बन गई थी। चाचा अब तक बच्चों को जादू की कहानी सुनाते आए थे, मगर ऐसा जादू अपनी आँखों से देख रहे थे। खुशी और डर साथ-साथ उनके दिमाग पर हावी थे। उन्होंने नाव पर पांव रखें और नाव बिना किसी नाविक के चल पड़ी। उन्हें पहली बार लगा कि वह जल्दी से जल्दी बच्चों के पास पहुंचें और उन्हें ये सारी बातें बताएं। नदी में बड़ी-बड़ी मछलियां तैर रही थीं। पानी इतना साफ था कि तल भी दिखाई दे रहा था। मछलियां इधर से उधर चौकड़ी भर रही थीं।

तो क्या लोग वैसे ही कहते हैं कि हिन्दुस्तान की सारी नदियां प्रदूषित हो चुकी हैं। यह नदी तो

इतनी साफ है कि झुककर पानी में अपना चेहरा देख लो। उन्होंने नीचे झुककर पानी से मुंह धोया। पानी पिया भी। एकदम मीठा पानी। नाव नदी में बही जा रही थी। उसे कोई चला भी नहीं रहा था। चाचा ने चौकड़ी भरकर आते हिरन के झुंड को पानी पीते देखा। तरह-तरह की चिड़ियों की आवाजें सुनाई दे रही थीं। हवा में फूलों और ताजे पत्तों की सुगंध थी। बहुत से पेड़ों पर लंगूर बैठे थे। उनकी पूंछे नीचे से मुड़ी हुई दादा जी के बेंत की तरह लग रही थीं, दूसरी तरफ बंदर पेड़ों पर उछल-कूद मचा रहे थे। चाचा को हँसी आ गई। दिल्ली में तो बंदरों को भगाने के लिए लंगूर लाए जाते हैं। यहाँ भी लंगूरों के आसपास बंदर नहीं थे। चाचा को जिन्न की बात सही लगी। शहरों के प्रदूषित वातावरण से जंगल कितने अलग थे। फिर भी लोग उन्हें काट रहे थे। वह सोचने लगे कि अगर सारे जंगल कट जाएं, तो यह धरती कैसी होगी, इसे आदमी क्यों नहीं सोचता है।

तभी नाव किनारे आ लगी। चाचा किनारे पर खड़े होकर सोचने लगे कि नाव को साइकिल कैसे बनाएं। या कि उन्हें पैदल ही यात्रा पूरी करनी होगी। लेकिन नाव किनारे तक बही और फिर से साइकिल बन गई। चाचा बहुत खुश हुए। ऐसा लगा कि अलादीन का कोई चिराग उनके हाथ लग गया है। जब जैसा चाहते हैं, हो जाता है।

वह साइकिल पर सवार हुए और चल दिए। उन्होंने एक बार मुड़कर नदी को देखा। यों लग रहा था जैसे हवा में उड़े जा रहे हों। भूख भी लग रही थी। अब किससे कहें।

कुछ आगे बढ़े तो रंगीन फूलों से लदा एक पेड़ नजर आया। आश्चर्य एक ही पेड़ पर लाल, बैंगनी, पीले, नारंगी, गुलाबी सब तरह के फूल खिले थे। ऐसा पेड़ उन्होंने पहली बार देखा था। और यह क्या पेड़ पर एक तरफ लाल सेब लटके थे, दूसरी तरफ नाशपाती, उसके नीचे अनार और केले। चाचा ने हाथ बढ़ाया और केले का गुच्छा तोड़ लिया। फिर उसे स्वाद लेकर खाने लगे। केले बहुत मीठे थे। फिर उन्होंने एक सेब और नाशपाती भी खायी। पेट खूब भर गया तो आगे बढ़े। पीछे मुड़कर देखा- अरे पेड़ कहां गया? कहीं उन्होंने कोई सपना तो नहीं देखा था। जिन्न कहां है। उसे भी तो भूख लगी होगी?

मेरी भूख के बारे में मत सोचो। मैं तो सैकड़ों साल से बिना खाए-पिए चल रहा हूँ।' उन्हें आवाज सुनायी दी।

तो ऐसी कोई तरकीब मुझे भी बता दो कि कुछ खाने की जरूरत ही न पड़े।

हां, पहले मेरी तरह जिन्न बनकर देखो तो पता चले। तुम आदमियों की यह कितनी बुरी आदत है कि जहां से लाभ मिलता दीखता हो, वही पाना चाहते हो। जिन्न बनने में कितनी आफत है, जानते हो। न धरती के न जन्नत के। बीच में लटके हैं। न मनुष्य हैं, न जानवर। चाचा को अपने कहे पर पछतावा हुआ। उन्होंने कहा-माफ करना भाई। मेरा इरादा तुम्हें दुख पहुंचाने का नहीं था। मैं तो बस ऐसे ही कह बैठा। तुम न मिलते तो पता नहीं मेरा क्या होता? - क्रमशः

- 17-बी1, हिन्दुस्तान टाइम्स अपार्टमेंटस, मयूर विहार फेज 1, दिल्ली मो0 : 9818258822

चिट्ठी कौन लिखे

संजीव जायसवाल 'संजय'

"हैलो, पापा, आपने कल भी मेरी फीस जमा नहीं की। आज आखिरी दिन है। अब क्या होगा?" सुबह-सुबह हास्टल से पिंटू का फोन आया।

"बेटा, मेरी तबियत खराब थी इसलिए फीस जमा नहीं कर सका। मगर आज जरूर जमा कर दूंगा" चीकू खरगोश ने बेटे को समझाया।

"लेकिन आज तो महीने का चौथा शनिवार है। अब दूसरे और चौथे शनिवार को बैंकों में छुट्टियां होने लगी हैं। अब तो मेरी फीस जमा नहीं हो पायेगी और मेरा नाम कट जायेगा" पिंटू फोन पर रोने लगा।

"बेटा, परेशान मत हो। महाराज लायन सिंह बहुत अच्छे हैं। उन्होंने चंपक वन का सारा काम आन लाईन करवा दिया है। मैं अभी ई-बैंकिंग से तुम्हारे स्कूल के खाते में फीस जमा करवाये दे रहा हूँ।" चीकू ने समझाया।

"अरे हाँ, मैं तो भूल ही गया था। मेरे स्कूल में भी अब पूरी पढ़ाई ई-बुक्स से होने लगी है।" पिंटू रोना भूल खिलखिला कर हँस पड़ा।

चंपक वन के नये महराज लायन सिंह बहुत समझदार थे। उनके पिता का राज्य दूर-दूर तक फैला हुआ था। लायन सिंह जब राजा बने तो उन्होंने देखा कि बड़े राज्य का काम-काज संभालने में कई मुश्किलें आतीं हैं। वह विज्ञान का महत्व जानते थे इसलिए उन्होंने चंपक वन में कम्प्यूटर के प्रयोग को बढ़ावा देना शुरू किया। इंटर-नेट की सहायता से उन्होंने कुछ ही दिनों में सारी चीजें आन-लाईन करवा दीं।

अब सारे जानवर अपने टेलीफोन और बिजली के बिलों को आन-लाईन जमा करते। सिनेमा के टिकट आन-लाईन खरीदते। कालू भालू ने तो आन-लाईन शहद की दुकान ही खोल दी थी। दूसरे जंगलों के भालू इंटर-नेट पर शहद का आर्डर देते और कालू उन्हें खूबसूरत से डिब्बे में शहद भेज देता।

चीकू खरगोश की दुकान में बना गाजर का हलुआ तो कई जंगलों में प्रसिद्ध हो गया था। पिंटू बंदर, हेमू हिरन, मोहनी मोरनी, दीपू उदबिलाव और चुन्नी गिलहरी के घर जब भी दावत होती वे चीकू की दुकान से हलुआ जरूर मंगाते। चीकू ने टिंगू कबूतर की कोरियर कंपनी से समझौता कर रखा था। आन-लाईन आर्डर मिलने के दो घंटे के भीतर ही वह हलुआ ग्राहक के घर भेजवा देता था।

सारी चीजें आन-लाईन हो जाने से चंपक वन के निवासी बहुत खुश थे। महाराज लायन सिंह कम्प्यूटर और इंटर-नेट की सारी व्यवस्था स्वयं देखते थे। धीरे-धीरे कई साल बीत गये। चंपक वन अब काफी उन्नति कर चुका था। महाराज लायन सिंह बूढ़े हो चले थे लेकिन वे अब भी कुछ

पिजन कूरियर
जहां न पहुंचे विजन
वह पहुंचे कूरियर पिजन।।

नया करना चाहते थे। एक दिन उन्होंने अपने मंत्रियों से सलाह मांगी।

"महाराज, इस धरती पर आबादी बढ़ती जा रही है और जंगल घटते जा रहे हैं। आने वाले समय में हम जानवरों के रहने के लिए जगह कम पड़ जायेगी" एक मंत्री ने कहा।

"आपकी बात तो सही है लेकिन इससे बचने का उपाय क्या है?" लायन सिंह ने पूछा।

"महाराज, चंद्रमा हमारी धरती के सबसे नजदीक है। हमें अपना राकेट भेज कर पता लगाना चाहिए कि वहाँ जानवरों को बसाया जा सकता है या नहीं?" मंत्री ने राय दी।

"अरे वाह, यह तो हमने सोचा ही नहीं था" महाराज का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।

उन्होंने एक ऊँची पहाड़ी की चोटी पर अंतरिक्ष प्रयोगशाला बनवायी और अपनी देख-रेख में चन्द्रयान बनवाने को काम शुरू करवा दिया। कई वैज्ञानिक और इंजीनियर चंद्रयान बनाने में जुटे थे। सारा काम बहुत तेजी से हो रहा था। महाराज लायन सिंह का भी ज्यादातर समय प्रयोगशाला में ही बीतता था। जंगल का काम-काज देखने की जिम्मेदारी उन्होंने अपने मौसेरे भाई रॉकी टाइगर को सौंप दी थी।

रॉकी टाइगर बहुत ही आलसी और कामचोर था। दिन भर इधर-उधर घूमता-फिरता फिर लंबी तान कर सो जाता। कम्प्यूटर और इंटरनेट का

काम देखने में तो उसका मन बिल्कुल ही नहीं लगता। उसकी लापरवाही के कारण बाकी कर्मचारी भी कामचोर होने लगे थे। इससे पूरे चंपक वन में अव्यवस्था फैलने लगी थी। कभी इंटरनेट का सर्वर डाउन हो जाता तो कभी बैंक तो कभी अस्पताल के कम्प्यूटर खराब हो जाते फिर कई-कई दिनों तक ठीक नहीं होते।

सभी ने रॉकी टाइगर से कई बार शिकायत की लेकिन वह ध्यान न देता। उल्टे शिकायत करने वालों से मारपीट पर उतारू हो जाता। उसने कई गुंडों को अपना दोस्त बना लिया था। वह सब भी पूरे जंगल में उत्पात मचाते रहते थे। इन सबसे चंपक वन के निवासी बहुत परेशान थे। उधर चन्द्रयान का काम अंतिम चरण में था। महाराज लायन सिंह अब कई-कई दिनों तक पहाड़ी से नीचे ही नहीं उतरते थे।

अचानक एक दिन इंटरनेट का मुख्य सर्वर पूरी तरह ठप्प हो गया। इसी के साथ सारे काम ठप्प हो गये। मोबाइल और टेलीफोन लाइनें बंद हो गयीं। न तो कोई अपना सामान बेच पा रहा था न कोई उसे खरीद पा रहा था। न ही कोई अपने बिल जमा कर पा रहा था और ही बैंक काम कर पा रहे थे। सभी अस्पतालों, कार्यालयों, रेडियो और टी.वी. चैनलों की भी व्यवस्था चरमरा गयी थी।

पूरे जंगल में आफत आयी हुयी थी लेकिन रॉकी टाइगर अपने में ही मस्त था। उसे सर्वर ठीक कराने की कोई जल्दी न थी। धीरे-धीरे तीन दिन बीत गये। परेशान जंगल वालों ने कालू भालू के घर पर सभा बुलायी।

"यह रॉकी टाइगर तो चंपक वन को बिल्कुल बर्बाद कर देगा। हमें महाराज लायन सिंह से इसकी शिकायत करनी चाहिए।" कालू भालू ने कहा।

"लेकिन हम शिकायत करेंगे कैसे? महाराज तो हफ्तों पहाड़ी से नीचे आते नहीं और सुरक्षा कारणों से दूसरों का ऊपर जाना पूरी तरह से मना है।" भीमा हाथी ने बताया।

समस्या गंभीर थी। महाराज पता नहीं कितने दिनों बाद नीचे आयें । तब तक तो सबकी हालत खराब हो जायेगी।

तभी टिंगू कबूतर ने कहा, "आप लोग सारी बातें विस्तार से एक पत्र में लिख दीजिए। मैं उड़ते हुए उसे महाराज तक पहुँचा आऊँगा।"

"हाँ यह ठीक रहेगा। टिंगू को पत्र बांटने का पुराना अनुभव है। वह काम आयेगा" कई जानवर एक साथ बोले।

"कालू भाई, आप कागज और कलम मंगवाइये। हम लोग अभी महाराज को पत्र लिखते हैं।" भीमा हाथी ने कहा।

"कागज और कलम?" कालू भालू सोच में पड़ गया।

"क्या बात है? इतना सोच क्या रहे हो?" भीमा ने टोंका।

"भाई कागज और कलम तो मेरे घर में नहीं है।" कालू ने झिझकते हुए बताया।

"क्यों?"

"जब से सारा काम आन-लाईन हो गया है तब से कागज-कलम की जरूरत ही नहीं रही" कालू ने कहा, फिर बोला, "आपका घर तो पास में ही है वहाँ से मंगवा लीजिए।"

"घर तो पास में है लेकिन...." भीमा हाथी भी सोच में पड़ गया।

"लेकिन क्या?"

"लेकिन कागज-कलम तो मेरे घर में भी नहीं होगा। कई सालों से उसकी जरुरत ही नहीं पड़ी क्योंकि अब सारा काम पेपर-लेस होता है।" भीमा हाथी ने संकोचपूर्वक बताया।

कई जानवरों से पूछा गया लेकिन कागज-कलम किसी के घर पर नहीं था। तभी मोहनी मोरनी वहाँ आयी। पूरी बात सुन उसने कहा, "मुझे कलम पर कार्टून बनाने का शौक है। मेरे घर पर कागज और कलम दोनों हैं। मैं दौड़कर ले आती हूँ। तब तक आप लोग सोच लीजिए कि पत्र में क्या-क्या लिखना है।"

मोहनी कागज-कलम लेने चली गयी। इस बीच सभी जानवर आगे बढ़-बढ़ कर बताने लगे कि शिकायत पत्र में क्या-क्या लिखना है।

मोहनी थोड़ी ही देर में कागज-कलम ले आयी और उसे कालू भालू की ओर बढ़ाते हुए बोली, "लीजिए दादा, फटाफट पत्र लिख दीजिए।"

"नहीं, मैं पत्र नहीं लिख सकता" कालू घबराते हुए पीछे हट गया।

"क्यों?"

"मैंने कई साल से कलम नहीं पकड़ी है। इसलिए मेरी तो लिखने की आदत ही छूट गयी है। इसे पिंटू को दे दो। वह लिख देगा।" कालू भालू ने कहा।

"मैं तो एक जमाने से सारा काम कम्प्यूटर पर कर रहा हूँ। कलम से लिखना तो मैं बिल्कुल ही भूल गया हूँ।" पिंटू बंदर ने भी झिझकते हुए बताया।

एक-एक करके कई जानवरों से पूछा गया लेकिन कोई भी पत्र लिखने को तैयार नहीं हुआ। ई-मेल करते-करते सभी लिखना भूल चुके थे।

"मिंकी भाई, तुम तो पत्र लिखने के लिए बहुत प्रसिद्ध रहे हो। एक जमाने में मैंने तुम्हारे लिखे सैकड़ों पत्र तुम्हारे दोस्तों तक पहुँचाये थे। तुम लिखना नहीं भूले होंगे। तुम कोशिश करके देखो।" टिंगू कबूतर ने मिंकी हिरण से अनुरोध किया।

सभी के कहने पर मिंकी पत्र लिखने के लिए राजी हो गया। उसने जब कलम पकड़ी तो उसके हाथ कांप रहे थे लेकिन फिर वह धीरे-धीरे लिखने लगा। सभी अपनी-अपनी शिकायतें लिखवाने लगे लेकिन एक पेज लिखने के बाद मिंकी की भी हिम्मत जवाब दे गयी। उसने कलम रख दिया।

ऐसी भी समस्या आ सकती है किसी ने पहले कभी सोचा भी न था। अब महाराज लायन सिंह तक अपनी बात कैसे

पहुँचायी जाये किसी की समझ में नहीं आ रहा था।

संयोग से महाराज लायन सिंह उसी दिन पहाड़ी से नीचे आये। सारे जंगल वासी उनके पास पहुँच गये। वहाँ फैली अव्यवस्था के बारे में जान महाराज को बहुत दुख हुआ। उन्होंने उसी समय रॉकी टाइगर के सारे अधिकार वापस छीन लिये। अगले ही दिन उन्होंने नया सर्वर मंगवा दिया। इंटर-नेट के शुरू होते ही सारी चीजें भी ठीक हो गयी।

लेकिन महाराज लायन सिंह बहुत चिंतित थे। उन्होंने चंपक वन के सभी निवासियों की सभा बुलायी और बोले, "उन्नति करना अच्छी बात है लेकिन पुरानी कला और संस्कृति को भुला देना अच्छी बात नहीं है। कम्प्यूटर और ई-मेल की दुनिया में आप लोग लिखने की कला ही भूल गये? यह बहुत गंभीर मामला है।"

"महाराज, आप सही कह रहे हैं लेकिन अब कलम से लिखने की कहीं जरूरत ही नहीं रही। इसलिए अगर कोई लिखना भी चाहे तो क्या लिखे? किताबें, अखबार और पत्रिकाएँ तक आन-लाइन मिलती हैं। सभी इंटरनेट पर ही लिखते और पढ़ते हैं।" कालू भालू ने विनम्रतापूर्वक कहा।

"आपका कहना भी सही है।" महाराज लायन सिंह ने आँखें बंद करके कुछ सोचा फिर बोले, "इसमें गल्ती मेरी ही है। राजा होने के नाते मुझे पुरानी कलाओं को सुरक्षित रखने के बारे में कुछ सोचना चाहिए था।"

इतना कह उन्होंने वहाँ जमा भीड़ पर दृष्टि दौड़ायी फिर बोले, "अब हर महीने जंगल में कहानी और कविता लिखने की प्रतियोगिता होगी। सभी जानवर एक जगह जमा होकर अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार कहानी या कविता लिखा करेंगे। अच्छा लिखने वालों को राज्य की ओर से पुरस्कार दिया जायेगा। इसके अलावा आप लोग अपने-अपने घर से किताबें भी लिख कर

जमा कर सकते हैं। उन पर भी हर साल पुरस्कार दिया जायेगा।''

''अरे वाह, इससे तो सबकी लिखने की आदत दोबारा से पड़ जायेगी और अच्छी-अच्छी कहानियां और कविता भी पढ़ने को मिलेंगी।'' चुन्नी गिलहरी ताली बजाकर हँस पड़ी।

''महाराज लायन सिंह बहुत अच्छे हैं।'' पिंटू बंदर ने भी ताली बजायी फिर हाथ उठाते हुए बोला, ''बोलो महाराज लायन सिंह की।''

''जय'' सभी ने हाथ उठा कर नारा लगाया।

महाराज लायन सिंह की योजना सफल रही। कहानी और कविता लिखने के बहाने चंपक वन के वासियों की लिखने की आदत दोबारा पड़ गयी थी।

- सी-5300, सेक्टर-12, राजाजीपुरम, लखनऊ-226017

देर से समझ

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

राहुल रात्रि का भोजन करके बिस्तर पर लेट गया। नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी। वह रह-रहकर करवटें बदल रहा था। कारण स्पष्ट था। सुबह परीक्षा-परिणाम जो आने वाला था। उसके मन में बुरे-बुरे विचारों का तांता बँधा हुआ था। उसे डर था कि कहीं उसकी नकल पकड़ी न गई हो और नकल करने के जुर्म में उसका परीक्षा-परिणाम रोक न दिया जाये अथवा वह अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया जाये। वह देर तक इन्हीं विचारों में डूबा रहा। अचानक उसकी आँखें लग गई। सुबह मुर्गे की बाँग के साथ ही उसकी नींद टूटी। उसके दिल की धड़कनें पुनः तेज हो उठीं।

राहुल शीघ्रता से न्यूज पेपर एजेन्ट के पास पहुँचा। वही हुआ, जिसका डर था। न्यूज पेपर में अपना अनुक्रमांक न पाकर राहुल परेशान-सा हो उठा। वह बुदबुदाने लगा-"अब घर आकर पापा-मम्मी को क्या जवाब दूंगा? मैंने पापा-मम्मी के सपने चकनाचूर कर डाले हैं, क्या वे मुझे माफ करेंगे?" यह विचार करते-करते राहुल ने दबे कदमों से घर के अन्दर प्रवेश किया और फुर्ती से कमरे की अन्दर से सिटकनी लगा ली। वह एक योजना बनाने लगा तथा उसे अंजाम देने की ओर बढ़ा।

राहुल चुपके से मम्मी के कमरे में घुसा व टेबल की दराज से अलमारी की चाबी निकाली। उसने अलमारी से दो हजार वाले दस नोट अपनी जेब में रखे। अलमारी बंद कर चाबी नियत स्थान पर रखते हुए अपने कमरे से एक बैग में तीन जोड़ी कपड़े रख लिए और रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा। संयोग की बात कि मुम्बई जाने वाली रेलगाड़ी आने को थी। उसने साधारण दर्जे की टिकट

लिया और रेलगाड़ी आते ही उसमें सवार हो गया। इधर राहुल को लेकर घर में कोहराम मच गया था। मम्मी ने अपनी अलमारी से रुपये और राहुल के कमरे से तीन जोड़ी कपड़े गायब देखे तो रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया। राहुल की मम्मी समझ चुकी थीं कि राहुल परीक्षा में फेल होने पर घर से रुपये और कपड़े लेकर कहीं भाग गया है। अब तो राहुल के पापा भी अपना संतुलन खो चुके थे। उनका भी रोते-रोते बुरा हाल था। पूरे घर में मातम छा गया था। मित्रों एवं रिश्तेदारों के घर फोन किये गये किन्तु नतीजा शून्य रहा। अन्त में पुलिस थाने में राहुल की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवा दी गयी। राहुल के मम्मी-पापा दोनों ही मिलकर ईश्वर से राहुल के शीघ्र घर लौटने की दुआ कर रहे थे। मम्मी ने पापा के साथ यह प्रण भी कर लिया था कि राहुल के सकुशल घर वापिस आ जाने पर कोई भी उसे भला-बुरा नही कहेगा। किन्तु, अनहोनी अपने पंख फैलाये हुए थी।

राहुल रेलगाड़ी से अट्ठारह घण्टे की यात्रा करके मुम्बई सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन पर उतरा। प्लेटफार्म पर हाथ-मुंह धोकर चाय-नाश्ता करने की गरज से वह एक रेस्टोरेन्ट में घुसा। वह चुपचाप एक मेज के साथ पड़ी कुर्सी पर जा बैठा। तभी वह क्या देखता है कि चार गुंडे एक बालक को पकड़कर ले जा रहे हैं। एक कह रहा था- ''घर से क्या सोचकर भागा यह बच्चू? फिल्मों में काम मिल जायेगा यहाँ? दूसरा बोला- ''परिवार वालों से लड़-झगड़कर आया है न? अब पता चल जायेगा रोटी-दाल का भाव?'' तीसरे ने रोबदार आवाज में उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा- 'चल बेटा, तुझे भीख मांगने के धंधे में डालेंगे। खुद भी खाना और हमें भी खिलाना।' वहीं चौथे ने अपना तर्क रखा- 'यह तो स्मगलिंग के धंधे में फिट रहेगा।' बालक गिड़गिड़ाये जा रहा था लेकिन चारों गुण्डे उसे घसीट कर बाहर ले गये और एक टैक्सी में बैठकर बालक सहित नौ दो ग्यारह हो गये।

यह दृश्य देखकर राहुल के शरीर में बिजली कौंध गयी। वह बिना चाय-नाश्ता किये ही रेस्टोरेन्ट से उठकर बाहर निकल गया। वह तेज कदमों से रेलवे स्टेशन आ पहुँचा और दिल्ली जाने वाली रेलगाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। घण्टे भर बाद जब रेलगाड़ी आयी तो वह टिकट लेकर उसमें सवार हो चुका था। रेलगाड़ी में ही उसने खाना खाया और चाय आदि

पी। पूरे सफर में उसने किसी भी यात्री से कोई बातचीत नहीं की क्योंकि उसे यह डर सता रहा था कि कहीं कोई उसे भी न पकड़ ले।

अगले दिन राहुल अपने घर पहुँच चुका था। राहुल को सम्मुख पाकर मम्मी-पापा एवं सभी परिवार जनों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। जब किसी ने भी राहुल से कोई प्रश्न नहीं किया, तो राहुल ने स्वयं ही अपनी आप बीती कह डाली। साथ ही साथ राहुल मम्मी-पापा के चरणों में गिर पड़ा और अपनी गलती की क्षमा मांगने लगा। उसने मम्मी के बचे हुए बाकी के रुपये भी उनके हाथों में थमा कर कहने लगा - "आगे से मैं ऐसा कोई भी काम नहीं करूँगा जिससे समाज में आपका सिर लज्जा से झुक जाये। मैं मेहनत करके पढ़ाई भी करूँगा और अच्छे अंक लाकर दिखाऊँगा।

सभी ने राहुल के प्रायश्चित की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो गुलाब के फूलों का कोई गुलदस्ता किसी ने लाकर वहां रख दिया हो। वातावरण महक उठा था और शीतल, मन्द, सुगंधित समीर के झोंके अजीब-सा सुकून दे रहे थे।

- 785/8, अशोक विहार,
गुरुग्राम-122006 (हरियाणा)
मोबाइल : 9210456666

हरीमन तोता

अखिलेन्द्र तिवारी

बहुत पुरानी बात है। गाजीपुर के जंगल में एक तोता रहता था। उसका मुँह लाल-लाल, शरीर हरा-हरा और गर्दन पर माला जैसा लाल रंग दिखाई पड़ता था।

इसी कारण उसे सब हरीमन तोता कहते थे। वह बातचीत में इतना चालाक था कि किसी को भी अपना साथी बना लेता था। उसके माँ-बाप उससे बहुत खुश रहते थे। क्योंकि वह उन्हें भी अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में उलझाये रहता था।

वह जिस पेड़ पर रहता था उसी पर कोयल का भी एक घोंसला था। जानते हो बच्चो! कौन कोयल होती है? वही कोयल! जो कूँक-कूँक कर शाम-सुबह सबका मन मोह लेती है।

कोयल के बेटे से तोते की दोस्ती हो गई। दोनों एक साथ रहते, जंगल को जाते, साथ-साथ खाते-पीते और फिर वापस आ जाते। लेकिन एक आदत उनकी बहुत खराब थी। वे सब शैतानी भी किया करते थे।

उनके पेड़ पर रहने वाले सभी पक्षी यह जानते थे कि वे सब बहुत अच्छे हैं। किन्तु जो रास्ते में उनकी हरकत देखता वह दाँतों तले अंगुली दबा लेता।

कभी किसी बन्दर के सिर पर ठोकर मार दी और उड़ चले, कभी हाथी की पूँछ पर बैठ गए, कभी सूढ़ पर चढ़ कर ठोकर मार दी और भाग चले।

सभी सोचते थे कि कौवे की क्या मजाल कि वह किसी को तंग करे। लेकिन उसका साथी हरीमन तोता जो है न..... वह बहुत

दुष्ट है। इसी को सबक सिखाना चाहिए। सभी लोग अवसर की तलाश में थे। किन्तु उन्हें कोई अवसर नहीं मिलता था।

संयोगवश एक दिन हरीमन तोता नदी के किनारे घूम रहा था। उसे पता नहीं था कि उसका कोई पीछा कर रहा है। पीछे से बहेलिये ने उसके ऊपर एक बड़ा कपड़ा फेंक दिया था।

हरीमन तोता अभी इधर-उधर कर रहा था। तब तक उसने उसे दबोच कर पकड़ लिया। अब वह क्या कर सकता था। बहेलिये ने उस जैसे कई तोते पकड़ रखे थे। वह बेचारा क्या कर सकता था।

अन्त में सभी पिंजड़े में बन्द असहाय सोच रहे थे... किन्तु कोई उपाय सूझ नहीं रहा था, वे करे तो क्या करे? बहेलिया अपनी लाठी में पिंजड़े को लटकाकर मस्ती से चल रहा था। इतने में बहेलिया को प्यास लगी वह अपनी लाठी सहित पिंजड़े को एक पेड़ पर टिकाकर पानी की तलाश में चला गया।

संयोग से उसी पेड़ पर बंदर बैठा था, जिसको हरीमन ने ठोकर मारी थी। जब उसने हरीमन को पिंजड़े में देखा तो व्यंग्य से बोला...क्यों हरीमन तोता! मजे में हो न.....।

कितनी बार तुम कमर पर चोंच मारकर हवा में फुर्र हो गये थे...। अब बहेलिया तुम सभी को ले जाकर जान से मार डालेगा....और पकाकर खा जायेगा....। हरीमन की अक्ल ठिकाने आ गई।

उसने कहा - हे बंदर भैया! मुझे माफ कर दो, हम सबको इस पिंजड़े से बाहर कर दो....। हम तो एक ही जंगल के हैं। कभी तो एक दूसरे के काम आयेंगे। तुम्हें भगवान बहुत आशीर्वाद देगा।

बन्दर ने उन पर दया की और धीरे से पिंजड़े का दरवाजा खोल दिया। हरीमन के साथ सभी बाहर आ गये और पेड़ पर बैठ गये। सभी ने बन्दर

भैया से हाथ मिलाया और कहा- हम सब एक साथ रहेंगे तभी हमें कोई नहीं सतायेगा। क्योंकि एकता में ही शक्ति होती है। बहेलिया अपना मुँह लेकर खाली हाथ पिंजड़ा लिए वापस हो गया। सभी हरीमन की बुद्धि की प्रशंसा करते आकाश में उड़ चले।

- प्राध्यापक केन्द्रीय विद्यापीठ,
हवेलिया, झूँसी, इलाहाबाद-211019

असली-नकली चेहरा

नयन कुमार राठी

आया होली का त्योहार.....कहां हो मेरे दोस्त भाई ..... तुम्हें रँगने को दिल है बेकरार..... आ जाओ कराओ नहीं इंतजार..... तुम्हें रँगे बिना रहा नहीं जाए..... रहा नहीं जाए। किताब हाथ में लिए कमरे में घूमते हुए सौरभ गा रहा है। मम्मी को आते देख वह झटपट कुर्सी पर बैठकर पढ़ने का नाटक करने लगा। वे आईं हँसते हुए बोलीं - सौरभ बेटे! अभी तुम जो गीत गुनगुना रहे थे। शायद कोर्स में है। वो...वो....बात ये है कि मम्मी! मुँह पर हाथ रखते हुए वे बोली- बेटे! कुछ नहीं बोलो। समझ गई हूँ। होली का त्योहार आ रहा है और तुम्हारी वार्षिक परीक्षा भी उसी समय है। अबके पढ़ाई के रंग में ही रँगना है। होली से ज्यादा पढ़ाई महत्वपूर्ण है। समझदार हो मेरी बात पर गौर करोगे। अच्छा चलती हूँ। और वे चली गईं। सौरभ ने मुँह बिचकाया और बोला-जब भी होली को लेकर कहता या सोचता हूँ। जाने कैसे मम्मी को भनक लग जाती है और सारा खेल चौपट हो जाता है। दोस्तों को फोन कर-करके आने को कह रहा हूँ पर सभी पढ़ाई का बहाना करके स्कूल में ही मिलने की बात कहते हैं। सभी मतलबी हैं। और भी जाने क्या-क्या बड़बड़ाते हुए उसने किताब बंद कर जोर से टेबल पर पटकी और पलंग पर आकर पड़ गया। इधर-उधर देखते हुए जाने कब उसकी आँख लग गई। लगा जैसे किताब उसके पास आई। आँखों में आँसू हैं। उदास-सी बोली सौरभ! अपने गुस्से का गुबार तुमने मुझपर

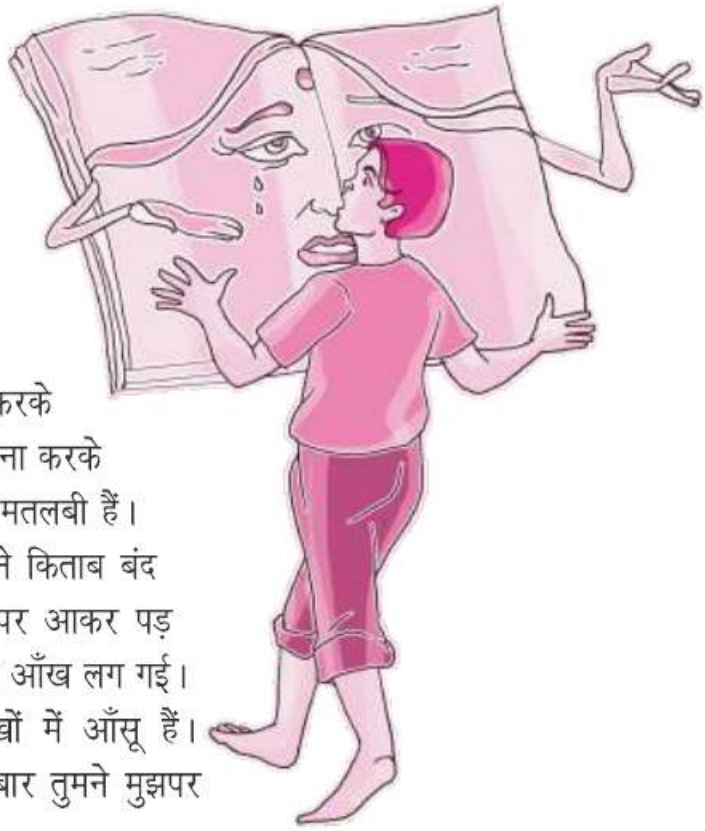

उतारा मालूम हो तुम्हारी तरह हमारा भी दिल है। कहने को हम बेजान हैं पर हमारे अंदर अक्षर रूपी अनमोल खजाना है जो हमारी कदर करता है हम उसके साथ होकर जीवन में रंग भर देती है जो हमारी कदर नहीं करता परिणाम बुरा ही होता है। अरे तुम होली को लेकर बेकरार हो रहे हो। दोस्तों को रँगने को आतुर हो। रोज़ फोन लगाकर बुलाने की कोशिश कर रहे हो पर वे आए क्या.....? सुनो, तुमसे ज्यादा उन्हें पढ़ाई की फिकर है। अरे होली का त्योहार हर वर्ष आता है, और परीक्षा भी हर वर्ष होती है। लेकिन इस बार परीक्षा के साथ होली का त्योहार है। मेरी मानो अगले बरस सारी इच्छा पूरी कर लेना। पढ़ाई का यह साल तुमने लापरवाही में खो दिया तो तुम्हारे संगी-साथी आगे बढ़ जाएंगे। और होली के रंग-बदरंग होकर रह जाएंगे। सोच लो मन में गुबार था सो निकाल दिया। अब तुम्हारी मर्जी.....! मैं चली.....अरे.....अरे....तुम कहाँ जा रही हो? तुम्हारी बातों पर अमल करूँगा। प्लीज़ मुझे छोड़कर नहीं जाओ। कहते हुए उसकी आँख खुल गई। देखा मम्मी चाय लिए खड़ी हैं। किताब अपनी जगह पर है। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली- 'बेटे! नींद में क्या बड़बड़ा रहे थे? यहाँ तो कोई नहीं है। किसे छोड़कर नहीं जाने की बात कह रहे थे।' हँसते हुए सौरभ बोला- 'मम्मी! कुछ नहीं.....ऐसे ही.....।' हँसते हुए वे बोली- 'बेटे! लाख छुपाओ.... छुप न सकेगा राज़ हो कितना गहरा....दिल की बात बता देता है असली-नकली चेहरा....?' उसने सारी बात बतायी। हँसते हुए मम्मी बोली- 'बेटे! सचमुच ऐसा हो जाए। तुम्हारी मनपसंद चीज मिलेगी। भूल तो नहीं जाओगी। 'नहीं मम्मी, बिल्कुल नहीं।' उसके कहने पर मज़ाकिया अंदाज़ में वे बोली- 'बेटे! वादों-कसमों का रंग होली के रंगों से ज़्यादा गहरा है। ऐसे ही नहीं छूटेगा। वाह मम्मी! बहुत खूब.....कहते हुए सौरभ मम्मी से लिपट गया। उन्होंने भी चपत लगाई।

- 64, उदापुरा, नरसिंह बाजार के पास,
इन्दौर-452002 (म.प्र.)
दूरभाष : 0731-2532410

चिड़ियों की रानी

शशि गोयल

मैं चिड़ियों की रानी गुनगुन गाना गाती हूँ
ढूँढ-ढूँढ कर जगह-जगह से दाना लाती हूँ
कभी बैठ मंदिर पर मैं मस्जिद पर जाती हूँ
कभी भजन सुनते-सुनते कलमा पढ़ आती हूँ
घर-घर की कितनी सीमाएं छूकर आती हूँ
बंसी की धुन सुनने मैं वृंदावन जाती हूँ
टूटी छत से घुसकर मैं अंडे दे देती हूँ
महलों की छत पर बच्चों को उड़ने देती हूँ
मैं पंछी आजाद नहीं बस तेरा चल सकता
अपना तेरी छोड़ो तो बस प्रेम भाव ही बचता
नफरत हिंसा करके मानव आखिर क्या पायेगा
ये घर निकला अगर हाथ वो घर ना आयेगा।

सप्तऋषि अपार्टमेंट, जी-9, ब्लॉक-3, सेक्टर-16बी, आवास विकास योजना, सिकन्दरा, आगरा-282010 मोबाइल : 9319943446

ठंडी छाँव

निर्मल 'प्रेमी'

नहीं मिलेगी ठंडी छाँव
पेड़ों से छीनी जा रही है इनकी आजादी
मूक बनकर कब तक इनकी देखेंगे बर्बादी
नहीं मिलेगी फिर हमको इनकी ठंडी छांव
शहरों में तबदील होते जा रहे हैं गांव
कम हो रही धरती से पेड़ों की आबादी
मूक बनकर कब तक इनकी देखेंगे बर्बादी
सांस लेना भी हमको हो जाएगा मुश्किल
प्रदूषण से हो रहा है मैला अपना आंचल
बीमार वातावरण के हम हो न जाएं आदी
मूक बनकर कब तक इनकी देखेंगे बर्बादी
आओ सभी मिलकर करें पेड़ों की रखवाली
कटने न दें पेड़ लगाएं और पेड़ बढ़े खुशहाली
गांव-गांव शहर-शहर गूंजे यह मुनादी
मूक बनकर कब तक इनकी देखेंगे बर्बादी।

- गाँव रामगढ़,
डाकघर फिल्लौर-144410
जालंधर (पंजाब)

वर्ग पहेली-12

(बालवाणी मई-अगस्त, 2021 (संयुक्तांक) के अंक पर आधारित)

कूट-संकेत

सुबोध कुमार दुबे

बायें से दायें

1. कहानी 'ठगों को ठगने वाला' के लेखक (6)
2. प्रस्थान (3)
3. खजाना (2)
4. देवी लक्ष्मी का एक नाम (2)
5. कहानी 'जीतने की इच्छा' के बाल कथाकार (4)
6. एक ग्रह का नाम जिसका गोचर पर दुष्प्रभाव होता है (2)
7. सीता जी का एक नाम, नाटक 'एक प्रयास' की प्रमुख पात्रा (3)
8. फूलों का पराग (4)
9. प्रण, दृढ़ इच्छा शक्ति, कहानी 'तुम्हें चाँद के बहाने देखूँ' का नायक (3)
10. झगड़ा, नोंक-झोंक (2)
11. दुर्बल, कमजोर (2)
12. सुषमा श्रीवास्तव रचित कहानी 'मिट्ठा खटमिट्ठा' में अभय द्वारा पालित अमरूद के पेड़ का नाम (3)
13. चन्द्रमा, कहानी 'रेस जीतने के लिए' के लेखक का उपनाम (2)
14. इमारत, घर (3)
15. आशा लता सामन्त द्वारा रचित कहानी का शीर्षक (5)
16. एक सुन्दर पुष्प देने वाला जलीय पौधा, कहानी 'कुत्ते की टेढ़ी दुम' की पात्र एक कुतिया (2)
17. कहानी 'झूठ की आग' के लेखक (11)

ऊपर से नीचे

18. कहानी 'चोरी और विनम्रता' का एक पात्र (3)
19. भगवान की एक उपाधि, कहानी 'ठगों को ठगने वाला' का नायक (4)
20. कहानी 'दोस्त कौन' की लेखिका (5)
21. धारावाहिक रूप से प्रस्तुत उपन्यास 'घर उड़ा आकाश' की सुप्रसिद्ध कथा लेखिका (4)
22. रोचक कहानी 'सागर की राजकुमारी' में एक काल्पनिक गाँव (5)
23. धरोहर के अन्तर्गत पंचतंत्र की कहानी का सूत्रधार पात्र एक कौवा (4)
24. कहानी 'सागर की राजकुमारी' का पात्र एक मछुवारा (3)
25. नरेश (2)
26. कहानी 'झूठ की आग' का मुख्य पात्र (2)
27. वर्तमान से पहले या बाद का दिन, मशीन (2)
28. कहानी 'बूढ़े बरगद की सूझ' के लेखक (6)
29. एक सर्वप्रिय मिष्ठान, कहानी 'अनोखा उजाला' का प्रमुख पात्र, एक किसान का बेटा (3)
30. धरती, चित्रकथा विश्व पर्यावरण पर्व की प्रमुख पात्र (3)
31. सारांश अकेडमी के नन्हे चित्रकार (3)
32. मृतक देह (2)
33. पंक्ति (3)
34. कहानी 'गुडबॉय बिल्ली' का बाल नायक (3)
35. युद्ध (2)
36. कहानी 'अनोखा उजाला' के लेखक (4)
37. कृष्ण जी का एक नाम (3)

उत्तर इसी अंक में देखें

1 सु ↓18			नि ↓19	2 ग		न	शा ↓20	↓21	भ ↓22
	3 नि				हि ↓23	अ ↓24	4	मा	
त		5 रा ↓25		वी				6	नी
श्या ↓36	↓26	7	न	की	ण्य	न		र्मा	
8	क		न्द	9 सं	↓27	ल्प		रा ↓28	
11 कृ		12 मि		ठा ↓37	↓29		व ↓30		
	↓31	13 श ↓32			ड्	अ ↓33		व	क ↓34
	14 भ			र			धा		
15 स			दा		र ↓35	16 लि		क्से	र
17 स		ना		य			ट		गर

- 'आनन्दाश्रय', 14/765, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016 मोबाइल : 09305220059

वन और हम

चित्रकथा :
रजनी श्रीवास्तव

इस रिपोर्ट के मुताबिक देश का कुल वनाच्छादित क्षेत्र (फारेस्ट कवर) 7,12,249 वर्ग किलोमीटर है, जो कि देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 21.67% है। देश का ट्री कवर लगभग 95,027 वर्ग किलोमीटर है, जो कि देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.89% है।
जम्मू–कश्मीर (371 वर्ग किलोमीटर)
हिमाचल प्रदेश (334 वर्ग किलोमीटर)।
इंडिया स्टेट ऑफ फारेस्ट रिपोर्ट, 2017 के मुकाबले इस वर्ष देश के फारेस्ट कवर में 3,976 वर्ग किलोमीटर (0.56%) की वृद्धि हुई है।
जिन राज्यों के फारेस्ट कवर में सबसे ज्यादा वृद्धि हुई है
दादू इन जंगलों के बारे में मुझे और बताइए कैसे हम इनके बारे में जानें।
कर्नाटक (1,025 वर्ग किलोमीटर)
आंध्र प्रदेश (990 वर्ग किलोमीटर)
केरल (823 वर्ग किलोमीटर)
तब दादू इसका कोई विशेष महत्व भी है कि बस ऐसे ही इनका रिकार्ड रखा जाता है।
देश के पहाड़ी जिलों में फारेस्ट कवर 2,84,006 वर्ग किलोमीटर है, जो कि इन जिलों के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 40.30% है।
जनजातीय जिलों में फारेस्ट कवर 4,22,351 वर्ग किलोमीटर है, जो कि इन जिलों के क्षेत्रफल का 37.54% है।

• उत्तर–पूर्व क्षेत्र का कुल फारेस्ट कवर 1,70,541 वर्ग किलोमीटर है, जो कि इस क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल का 65.05% है।
• पिछले आकलन के मुकाबले इस वर्ष देश के मैन्ग्रोव कवर में 54 वर्ग किमी. (1.10%) की वृद्धि हुई है।
• देश का कुल बांस युक्त क्षेत्र 1,60,037 वर्ग किलोमीटर है, इसमें 3,229 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है।
अरे वाह, हमारा वन क्षेत्र में इतनी वृद्धि हुई है वाह यह तो अच्छी बात है,
बेटा यह एक खास तरीके के वृक्ष है जो, खारे पानी या अर्ध खारे पानी में उगते है अक्सर यह ऐसे तटीय क्षेत्रों में होते है जहां कोई नदी किसी सागर में बह रही होती है, जिससे जल में मीठे पानी और खारे पानी का मिश्रण होता है, यह वन समुद्री तटों को स्थिरता प्रदान करते है।
दादू यह मैन्ग्रोव क्या है.....?
मैंग्रोव वनों द्वारा समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहता है, मैंग्रोव जड़े तलछट तथा अन्य प्रदूषक तत्वों से मूंगों की रक्षा करती है, बदले में मूंगे की चट्टानें तेज समुद्री लहरों के वेग को कम करके मैंग्रोव क्षेत्रों की रक्षा करती है।
• वर्तमान में वनों में कुल कार्बन स्टॉक लगभग 7,124.6 मिलियन टन है, इसमें 2017 के आकलन के मुकाबले 42.6 टन की वृद्धि हुई है।
दादू यह कार्बन स्टॉक क्या है?
अगले पेज पर.....

बेटा कॉर्बन स्टॉक मतलब पेड़ों के द्वारा अवशोषित किया जाने वाला कॉर्बन डाई ऑक्साइड, तुमको तो पता ही है कि पेड़ पौधे जीवित रहने के लिए कॉर्बन डाई आक्साइड गैस का प्रयोग करते हैं और बदले में ऑक्सीजन गैस हमारे लिए उत्सर्जित करते है...

वाह दादू इसका मतलब जितना वन क्षेत्र बढ़ेगा उतना ही कॉर्बन स्टॉक भी बढ़ेगा, यह तो अच्छी बात है।

- देश में कुल 62,466 आर्द्र क्षेत्र हैं, जो कि देश के 3.83% हिस्से पर फैले हुए हैं।
- ईंधन के लिए वनों पर सर्वाधिक निर्भरता महाराष्ट्र में है, जबकि चारे के लिए वर्णों पर सर्वाधिक निर्भरता मध्य प्रदेश में है।

दादू यह विश्व वानिकी दिवस क्या है..?

विश्व वानिकी दिवस प्रति वर्ष 21 मार्च मनाया जाता है और इसकी शुरूआत 1971 में इस उद्देश्य से की गयी कि दुनिया के तमाम लोग अपनी मातृभूमि की मिट्टी और वन सम्पदा का महत्व समझें तथा अपने–अपने देश के वनों और जंगलों का संरक्षण भी करें।

वाह दादा जी! यह वानिकी दिवस तो बहुत महत्वपूर्ण दिवस है देश तथा पर्यावरण के लिए।

बेटा भारत में वन महोत्सव जुलाई 1950 से ही मनाया जा रहा है, क्योंकि उस समय वर्षा ऋतु रहती है, जिसमें नए–नए पौधे जीवन पाते है। इसकी शुरूआत तत्कालीन गृहमंत्री कुलपति कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी जी ने की थी।

समाप्त

यही मंत्र है खास

सीताराम गुप्ता

करना जो भी काम हो कर रखकर विश्वास,
यही सफलता सूत्र है यही मंत्र है ख़ास।

घर आए मेहमान का कर आदर सत्कार,
बड़ों को झुक प्रणाम कर बच्चों को कर प्यार।

बड़े-बुजुर्गों का सदा हर कहना तू मान,
उनकी बातों से मिले, जीवन-अनुभव-ज्ञान।

कठिन परिश्रम बाद जो करते हैं विश्राम,
औरों से कुछ अधिक ही कर पाते वो काम।

औज़ारों की काम के पैनी रखते धार,
कभी न अपने काम में खाते हैं वो मार।

खाली कभी न बैठना करते रहना कर्म,
यही जीवन का मर्म है यही है जीवन धर्म।

ऊँचाई पर पहुँचना नहीं कठिन तू जान,
लदा हुआ जो पीठ पर कम कर दे सामान।

पूरे मन से पग बढ़ा लगातार दो चार,
जल्दी ही हो जाएगा ऊँचा पर्वत पार।

जो जीवन पथ पर चलें अपने मन को साध,
होता उनका ही सदा, जीवन पथ निर्बाध।

बड़ी-बड़ी मत बात कर गुप्ता सीताराम,
अपने मन को साधकर कर उपयोगी काम।

ए.डी. 106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034 मोबाइल : 9555622323

डाक-टिकट

जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

आओ प्यारे देखे खेले,
डाक टिकट से करके मेल।
देखे क्या ये हमें बताते,
सीख नई हमको दे जाते।

देखो कितने है ये प्यारे,
भाँति - भाँति के रंग सितारे।
लेकर मिलते कई आकार,
देखे चकित है यह संसार।

इनको संग्रह करने वाले,
फिलैटलिस्ट है वो कहलाते।
इनका संग्रह सब जन करते,
बच्चो को यह ज्यादा भाते।

युग युग का इतिहास छिपाये,
भाषा संस्कृत को दर्शायें।
युगों से गहरा इनका सम्बन्ध,
खड़े हुए जैसे प्रकाश स्तम्भ।

राजा हुए कौन कौन से,
और प्रशासक थे कितने।
कितने हुए समाज सुधारक,
कितने नेता यहाँ बने।

पूँजीपतियों की गिनती क्या,
कितने यहाँ मूर्तिकार थे।
क्रान्तिवीर थे कौन कौन से,
कितने यहाँ चित्रकार थे।

लेखक कौन कौन से कवि थे,
कौन - कौन साहित्यकार थे।
बादल राग सुनाने वाले,
कौन - कौन संगीतकार थे।

नई - नई खोज करने वाले,
वैज्ञानिक कितने हुए यहाँ।
इतिहास धर्म के स्थल से,
कौन जगह है जो बची यहाँ।

क्या - क्या घटना घटी देश में,
क्या - क्या विपदा पड़ी देश में।
क्या - क्या है विस्तार हमारे,
क्या - क्या है अब लक्ष्य हमारे।

किसने क्या - क्या दिये है नारे,
कौन पुरस्कृत हुए सितारे।
कहाँ - कहाँ है कल कारखाने,
कहाँ - कहाँ पहुँचे दीवाने।

कहाँ - कहाँ पर विजय है पाई,
क्या - क्या हमने चीज बनाई।
क्या - क्या है यात्रा के साधन,
कहाँ नहीं पहुँचा मानव जन।

कहाँ - कहाँ हम शिक्षा पाते,
कहाँ खेलने हम है जाते।
मनोरंजन के क्या है साधन,
क्या - क्या है कानूनी बंधन।

इस प्रकार हमने यह जाना,
दुनिया भर में क्या क्या होता।
संग्रह की माला में अपनी,
कैसे - कैसे फूल पिरोता।

आंतरिक्ष में कोई पहुँचता,
कोई जंगल में है जाता।
तितली की है अजब कहानी,
पशु पक्षी का कैसा नाता।

नेहरू कोई रहा सजाता,
कोई गाँधी को अपनाता।
संग्रह अपने मन का करता,
जिसके मन को जो भी भाता।

भाँति - भाँति के होते संग्रह,
अपने में बेजोड़ निराले।
देखा सबने कैसे - कैसे।
शिक्षाप्रद लगते मतवाले।

छोटे - बड़े डाक टिकटों पर,
मूल्य छपे है अलग-अलग।
लेकिन उनमें से भी कुछ ऐसे,
दंग रह गया जिसे देख जग।

बड़े पारखी भी तो वर्षों,
बहुत दिनों तक रहे सजाते।
प्रदर्शिनियों को लगा लगा कर,
समय - समय पर है दर्शाते।

दर्शक आते भीड़ लगाते,
उंगली दातों तले दबाते।
ऊँचे देख कर उनके भाव,
संग्रह की बढ़ती है चाव।

काश हमारे पास ये होते,
फिलैटलिस्ट हम कहलाते।
यह सब दुख के प्यारे भाई,
कुछ ने है स्कीम बनाई।

आज से हम भी करेंगे संग्रह,
कर डालेंगे सबका संग्रह।
काई टिकट न होगा बाकी,
जिस पर हमने आँख उठा दी।

सारे जग में मित्र बनाये,
आपस में मिल ज्ञान बढ़ाएं।
बनें फिलैटलिस्ट होगा नाम,
फिर क्या करना हमको काम।

आओं हाथ बढ़ाओ अपना,
पूरा होगा सारा सपना।
भारत का ऊँचा हो भाल,
ज्योतिर्मय हो बना मशाल।

- 127, रवीन्द्र गार्डेन, अलीगंज, लखनऊ-226024 मोबाइल : 7905107624

चला चला, मैं ये चला

डॉ. बानो सरताज

एक गांव में एक वृद्ध दंपति रहता था। दोनों एक दूसरे का सहारा थे। रूखा-सूखा खाकर जीवन व्यतीत कर रहे थे।

एक दिन बूढ़े को गुलगुले खाने की इच्छा हुई बुढ़िया से कहा, ''आज गुलगुले बनाओ भई।''

''गुलगुले!'' बुढ़िया ने ठंडी सांस ली, ''वाक़ई हमने कितने वर्षों से गुलगुले नहीं खाए। इच्छा तो मुझे भी हो रही है पर.....'' ''पर क्या?'' बूढ़े ने उतावलेपन से पूछा।

''आटा खत्म हो गया है।'' बुढ़िया ने निराशा से कहा।

''भई! डिब्बे को झटको, थोड़ा आटा तो निकल ही आएगा। कुछ करो। चाहे एक ही गुलगुला बनाओ। दोनों आधा-आधा खा लेंगे।''

बुढ़िया ने बतख़ के पर से डिब्बे में लगा हुआ आटा खुरच कर निकाला। दूध से आटा गूंथा, चीनी डाली और एक बड़ा गुलगुला बनाया। बड़े प्यार से तला और ठंडा होने के लिए ताक़ पर रख दिया।

गुलगुला रख कर जैसे ही बुढ़िया हटी, एक विचित्र बात हुई, गुलगुले ने हरकत की।

उसने खुली हवा में घूमने का प्रोग्राम बनाया। लुढ़क पड़ा ताक़ से लुढ़क कर बेंच पर गिरा।

बेंच से लुढ़क कर फ़र्श पर पहुँचा।

फ़र्श से लुढ़कते-लुढ़कते द्वार की ओर बढ़ा।

उछल कर दहलीज़ लाँघ गया।

सीढ़ियों से उतर कर आंगन में पहुँचा।

आँगन के फाटक को पार किया और.....

सड़क पर पहुँच गया।

खुली हवा में पहुँचते ही गुलगुले का अंग-अंग झूमने लगा।

चला चला, मैं ये चला

वह शहर से दूर निकल गया, मस्ती में गाने लगा :

गुल-गुला मैं गुलगुला- गोल -मटोल गुलगुला
मीठा-मीठा गुलगुला- सोंधा-सोंधा गुलगुला।
चीनी, आटे, दूध मिला- मज़ेदार मैं गुलगुला
आओ भाई गुलगुला-गोल-गोल गुलगुला।।

सहसा उसके सामने एक ख़रगोश आ गया। गुलगुले को देख उसके मुंह में पानी आ गया। बांछें फाड़कर बोला, "आहा हा! रस-भरा! मैं तुझे खाऊँगा गुलगुले।"

गुलगुले ने गिड़गिड़ा कर कहा, ".....दया करो। मुझे न खाओ। मैं तुम्हें गाना सुनाता हूँ।"

"गाना, वाह-वाह गाना!" ख़रगोश खुश हो गया, बोला, "तुम्हें खाऊँ या ना खाऊँ यह बाद में सोचूँगा, पहले गाना सुनाओ। गुलगुला गाने लगाः

मैं हूँ गोल गुलगुला
दादा ने फ़रमाइश की- दादी
जी ने मुझे तला।
ताक़ में ठंडा होने को-
तश्तरी में रखा भला।
वहाँ से लुढ़का-लुढ़क चला
चला चला, मैं ये चला।।

ख़रगोश आँखें बंद करके गाना सुन रहा था। पलक झपकते गुलगुला दूर निकल गया। ख़रगोश मुँह देखता रह गया।

थोड़ी दूर चला था कि एक भेड़िए ने रास्ता रोक लिया। दांत निकाल कर बोला, "गुलगुले, अपनी ख़ैर मना! अभी-अभी मैंने भोजन किया है। भगवान ने तुझे 'स्वीट डिश' के रूप में मेरे लिए ही भेजा है।"

गुलगुले ने कहा, "पहले मेरा गाना सुनो, पसंद न आए तो मुझे खा लेना। पसंद आए तो मुझे बख़्श देना।"

"चल यही सही! गाना शुरू कर।" भेड़िए ने धरती पर पसरते हुए कहा।

गुलगुले ने गीत शुरू किया :

चला चला, मैं ये चला
मैं हूँ गोल गुलगुला
नटखट और चुलबुला।।
दादा ने जब फ़रमाइश की- दादी जी ने मुझे तला।
ताक़ में ठंडा होने को- तश्तरी में रखा भला।
पारे जैसा चुलबुला- पानी का मैं बुलबुला।
ख़रगोश को ना, तुम्हें मिला
चला चला, मैं ये चला।।

भेड़िया गुर्राता रह गया। गुलगुला लुढ़क-लुढ़क कर भाग निकला। एक स्थान पर साँस लेने को रुका ही था कि एक भालू ने उसे ताक लिया, बोला,

"आज मुझे शहद खाने को नहीं मिला, मीठे को तरस रहा था, चल तुझे ही खाता हूँ।"

गुलगुले ने अपनी जान की ख़ैर मनाते हुए कहा, "मेरा गाना सुनो, निश्चित ही तुम्हारी उदासी दूर हो जाएगी। फिर संभवतः तुम मुझे खाने का इरादा छोड़ दो।"

"तू कहता है तो सुन लेता हूँ अन्यथा मैंने एक बार जो निश्चित कर लिया सो कर लिया।" यह कहकर भालू लेट गया। गुलगुले ने गाना शुरू किया:

मैं हूँ गोल गुलगुला
नटखट और चुलबुला।।
दादा ने जब फ़रमाइश की- दादी जी ने मुझे तला।
ताक़ में ठंडा होने को- तश्तरी में रखा भला।
ख़रगोश भेड़िए से बच निकला- हाथ तुम्हारे क्यों लगूं भला?
करते बैठो क़िस्मत से गिला
चला चला, मैं ये चला।।

भालू अपना भारी बदन समेट कर जब तक उठता, गुलगुला दूर निकल चुका था।

एक लोमड़ी बहुत देर से गुलगुले का पीछा कर रही थी। धीरे से झाड़ियों से निकलकर गुलगुले के सामने खड़ी हो गई, बोली, "ओह! प्यारे गुलगुले! कितना सुंदर गाते हो! तुम्हारी आवाज़ में जादू है। सभी जंगलवासी तन्मयता से तुम्हारा गाना सुन रहे हैं। गाते रहो। मुझ दुखियारी के हृदय का दुख भी दूर करो।"

"हां क्यों नहीं?" गुलगुला अपनी प्रशंसा सुन प्रसन्नता से फूल कर कुप्पा हो गया। बोला, सुनो. ...मैं गा रहा हूँ:

गुलगुला मैं गुलगुला- गोल-मटोल गुलगुला
मीठा-मीठा गुलगुला- सोंधा-सोंधा गुलगुला
चीनी-आटा-दूध मिला- मज़ेदार मैं गुलगुला।
आओ भाई गुलगुला- गोल-गोल गुलगुला।।

लोमड़ी ने प्रशंसा के डोंगरे बरसा दिए। बोली, "वाह! क्या आवाज़ है! क्या मिठास है! पर बेटा, मैं बूढ़ी हूँ, कम सुनाई देता है। ज़रा मेरी नाक पर बैठ कर गाना सुनाओ तो मुझे बराबर सुनाई दे और मेरे हृदय को शांति मिले।"

"अभी लो।"

गुलगुला उचक कर लोमड़ी की .... नाक पर बैठ गया और गाने लगाः

गुलगुला मैं गुलगुला-गोल-मटोल गुलगुला।
मीठा-मीठा गुलगुला- सोंधा-सोंधा गुलगुला।।

लोमड़ी ने उसे रोक कर कहा, "तुम्हारा गीत मेरी नस-नस में उतर कर मुझे शांति दे रहा है... पर देखो, तुम्हारे शरीर पर लगा तेल मेरी नाक पर लग गया है। मुझे भय है कि कहीं मेरी नाक पर से फिसल कर तुम नीचे न गिर जाओ। ज़रा नीचे सरक कर जम कर बैठो और गाओ, गाते रहो।"

गुलगुला नीचे की ओर खिसका था कि लोमड़ी ने मुंह खोला और उसे चट कर गई फिर मगन होकर लोमड़ी ने गीत छेड़ दियाः

मज़ेदार मीठा गुलगुला
था बड़ा ही बड़बोला।
हुशियारी पर अगर न इतराता
जान से जाता क्यों भला?

सच कहा लोमड़ी ने। अपनी प्रशंसा सुनकर मानव को हवास नहीं खो देने चाहिए, स्वयं पर क़ाबू रखना चाहिए।

- आकाशवाणी के सामने, सिविल लाइन्स, चन्द्रपुर-442401

जैसा साथ, वैसी सोच

तन्मय द्विवेदी

एक था जंगल। खूब हरा भरा। हर ओर नजर आते पेड़-पौधे। पेड़ों पर फल-फूल ही नहीं, विभिन्न तरह के पक्षियों का भी बसेरा था। कभी एक पेड़ से दूसरे पर जाने के दौरान अठखेलियां करते पक्षी। ऐसे हरे-भरे माहौल में तीन दोस्त मेले से लौटकर अपने घर जा रहे थे। गांव दूर था और वे थक भी काफी गये थे सो तीनों ने तय किया कि कुछ देर आराम करने के बाद आगे की यात्रा पूरी की जाए।

यह सोच वह एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे। शायद जल्दी ही उन्हें नींद आ जाती, परन्तु एक चिड़िया के बार-बार चहकने से उनका ध्यान बंट रहा था। उन्होंने ध्यान से चिड़िया के चहकने को समझने की कोशिश की। वह कह रही थी.... 'चक-चक-चक।' तीनों दोस्त अपने अनुमान से यह बताने

की कोशिश करने लगे कि वह क्या कह रही है उनमें से एक था भगत। उसने कहा कि चिड़िया कह रही है--- 'राम-कृष्ण-भरत।' दूसरा दोस्त वैश्य था। उसने भगत के दावे का विरोध किया और कहा कि चिड़िया चक-चक-चक के बहाने कह रही है- 'हींग-हल्दी-अदरक।' तीनों एकबारगी हँस पड़े, फिर भी तीसरे पहलवान दोस्त ने कहा कि तुम दोनों ही उसकी भाषा नहीं समझ पा रहे हो। चिड़िया चक - चक - चक करते हुए कह रही है- 'दण्ड - बैठक - कसरत।'

तीनों दोस्त में अपनी बात को सही ठहराने के लिए वाद-विवाद बढ़ता ही गया। कोई भी दूसरे की बात मानने को तैयार नहीं था। ऐसे में तीनों ने तय किया कि जंगल में कुछ ही दूरी पर जो साधू रहते हैं उनसे चलकर चिड़िया के चहकने का वास्तविक अर्थ जाना जाए। तीनों दोस्तों ने आराम का खयाल छोड़ दिया और साधू से मिलने उसकी कुटिया की ओर चल पड़े।

थोड़ी देर बाद साधू

की कुटिया दिखने लगी। वह बाहर की क्यारियों में काम कर रहे थे। तीनों दोस्तों ने पहुँचकर प्रणाम किया और अपनी समस्या बताई।

संन्यासी हँस पड़े और कहा कि तुम तीनों ही अपनी-अपनी जगह सही हो। दरअसल, जिस वातावरण में तुम्हारा विकास हुआ, जिनके बीच तुमने अपना समय बिताया, उसी अनुसार तुम चिड़िया की चहक का अर्थ लगा रहे हो। ऐसे में महत्वपूर्ण यह नहीं है कि चिड़िया क्या कह रही है बल्कि यह है कि तुम्हें हमेशा अच्छे वातावरण और दोस्ती को प्रमुखता देनी चाहिए। यह वातावरण और तुम्हारे आस-पास के लोग अच्छे होंगे तो तुम्हें अच्छे संस्कार मिलेंगे और गर इसका उल्टा हुआ तो उतना ही तुम्हारे भविष्य के लिए नुकसानदेह होगा।

तीनों दोस्त ने भी महसूस किया कि वह चिड़िया के चहकने का जो अर्थ लगा रहे थे, उसके पीछे प्रमुख कारण यही था कि उनका अलग-अलग किन स्थितियों में विकास हुआ। तीनों ने संन्यासी की सीख को सिर माथे लिया और अभिवादन करके अपने गांव की ओर चल पड़े।

- 355/123ख, आलमनगर, लखनऊ-226017

मिट्ठू की आजादी

श्याम नारायण श्रीवास्तव

स्वतंत्रता दिवस यानि आजादी का पर्व जैसे ही निकट आया। स्कूलों में इस पर्व को उत्सव के रूप में मनाने की तैयारी शुरू हो गई। सभी कक्षाओं में सूचना पहुँच गई। आजादी के पर्व के दिन सभी बच्चे सफेद ड्रेस में आयेंगे। दरअसल माधव के स्कूल में दो तरह की ड्रेस है। बुधवार व शनिवार को सफेद पैंट और शर्ट। बाकी अन्य दिनों में स्लेटी रंग का पैंट और शर्ट है। इसी के साथ और सूचनायें दे दी गई। जैसे कितने बजे स्कूल आना है। झंडारोहण के लिए मुख्य अतिथि कौन होंगे और कार्यक्रम के बाद सभी बच्चों को मिठाई मिलेगी।

जिन बच्चों को डांस व गीत प्रस्तुत करने हैं। उनके ड्रेस तो पहले ही बता दिए गये हैं। जो बच्चे मुख्य अतिथि के पास खड़े होकर राष्ट्रगान गायेंगे, उन्हें भी बता दिया गया। आदित्य, जलज, यश, अंश, दिव्यांश, पावनी आदि के साथ माधव को भी राष्ट्रगान के लिए चुना गया था।

पन्द्रह अगस्त को देश भक्ति के फिल्मी गीतों की आवाज स्कूल ही नहीं बल्कि बाजार की

दुकानों व सड़क के चौराहों पर भी गूंज रही थी। बच्चे हाथों में तिरंगा झण्डा लिए स्कूल की ओर भागे चले जा रहे थे। रंगीन पन्नियों से पूरे बाजार को लोगों ने सजाया था। हर तरफ खुशी का वातावरण। सभी बच्चे समय से स्कूल पहुँच गये।

स्कूल के मैदान में सारे बच्चे टीचर के साथ लाइन में खड़े हो गये। तभी खेल के टीचर ने माइक पर घोषणा की। अब हमारे बीच प्रिंसिपल सर के साथ मुख्य अतिथि के रूप में जनपद के जिला शिक्षा अधिकारी पधार रहे हैं। आप सभी लोग जोरदार तालियों से स्वागत करें। बच्चों ने तालियाँ बजाई।

इसी के साथ झंडारोहण हुआ। राष्ट्रगान गाया गया। भारत माता की जय के साथ मुख्य अतिथि ने अपना भाषण शुरू किया।

"इस स्कूल के प्रिंसिपल साहब, सभी टीचर्स व प्रिय बच्चो, सबसे पहले आज आजादी के इस पावन पर्व पर आप सभी को हार्दिक बधाई।" और अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, "बच्चो! यह आजादी क्या है, जानते हैं आपलोग? आजादी का मतलब होता है, हमारा जो भी अधिकार है हमें हमारी इच्छा के अनुसार मिलना चाहिए। भोजन, चिकित्सा, शिक्षा आदि तमाम जीवन से जुड़ी आवश्यकताएं पूरी होनी चाहिए। हम सब कोई भी कार्य करने के लिए स्वतंत्र हों। हाँ, लेकिन एक अनुशासन के भीतर और वह अनुशासन स्थापित करता है हमारा संविधान, हमारा कानून। हमारी आजादी की सीमा वहाँ तक है जहाँ तक दूसरे की आजादी भंग न हो। बच्चों आप मेरी बात समझ रहे हो न, मैं क्या कहना चाहता हूँ?

"जी सर" पूर ग्राउण्ड से ज़ोरदार आवाज आई।

"बहुत अच्छा, देखो जैसे कुछ लोग तोते को पिंजरे में बंद कर घर में रखते हैं, बंदर, भालू आदि को पकड़कर रखते हैं। सोचो पक्षी आकाश में उड़ते हैं तो कितने अच्छे लगते हैं। लेकिन जब उसे किसी पिंजड़े में कैद कर दिया जाये तो उन्हें कितना दुख होता होगा। वह बाग-बगीचे में उड़कर अपने मनचाहे फल नहीं खा सकते।

मतलब वे आजाद नहीं हैं। वे अपने परिवार व परिचितों से जब चाहे मिल नहीं सकते। वे गुलाम हैं दूसरों के। दूसरे लोग उसके मालिक हैं। वे अपनी मर्जी से उसे खाना-पानी देते हैं और उसे वही खाना पड़ेगा। चाहे उसे पसन्द हो या न हो। उसकी मजबूरी है। भूख लगेगी तो उसे वही खाना है जो उसके मालिक ने दिया है।

ऐसे ही आजादी के पहले हमारे देश में अंग्रेज़ों का राज था। हम उनके गुलाम थे, वे हमारे मालिक थे। हम उनके लिए काम करते थे। लेकिन हम कोई काम अपनी मर्जी से नहीं कर सकते थे। क्योंकि हम सब आजाद नहीं थे। बहुत संघर्षों के बाद महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सुभाष चन्द्र बोस जैसे बहुत से नेताओं ने जनता के साथ मिलकर अंग्रेज़ों को यहाँ से भगाया।

आजाद किया भारत देश को और हम सब को। आज हम सब आजाद हैं लेकिन हमें आजादी की कीमत जाननी चाहिए। अपना संविधान हमें जानना चाहिए। इसकी हमें रक्षा करनी चाहिए। इस आजादी के दिवस पर आप सभी को एक बार फिर से बधाई हो। इसी के साथ उन्होंने कहा, "बोलिए भारत माता की जय।" सभी ने एक साथ जयकारा लगाया। "भारत माता की जय।"

फिर कुछ बच्चों ने अपना गीत प्रस्तुत किया और अंत में मिठाई का पैकेट सभी बच्चों को दिया गया। मिठाई माधव ने भी ली। लेकिन उसका मन नहीं लग रहा था। वह जल्दी से घर पहुँचना चाहता था। उसे अपने आंगन में अमरूद के पेड़ के पास पिंजड़े में बंद तोते की याद आ रही थी। वह तेजी से घर की ओर भागा। रास्ते में सोचता जा रहा था। उसका तोता मिट्ठू भी तो हमारे परिवार के

सदस्यों का गुलाम है। वह भी तो उन्मुक्त होकर अन्य चिड़ियों की तरह उड़ना चाहता होगा। वह तो मेरे ही आंगन में लगे अमरूद के पेड़ से अपनी मर्जी से फल नहीं खा सकता।

उस पेड़ पर बाहर के तोते जब भी आते हैं और बोलते हैं तो यह पिंजड़े का तोता भी बोलता है। माधव अब तक बड़ा खुश होता था। देखो मेरा तोता बात कर रहा है। लेकिन आज उसे लगा। उसका तोता भी उनसे अपनी आजादी के लिए कहता होगा।

अब तक माधव घर पहुँच चुका था। उसने अपने पैकेट से लड्डू का एक टुकड़ा तोते की कटोरी में रखते हुए कहा, "लो मिट्ठू ये आजादी का लड्डू है, खा लो।"

तोते ने नहीं खाया। अचानक माधव की आँख में आँसू आ गये।

"अरे हाँ, तुम्हारे लिए यह आजादी की मिठाई तो है ही नहीं। तुम तो हमारे गुलाम हो। आजादी की मिठाई तो अपनों के साथ खायी जाती है।"

इसी के साथ माधव ने बिन मम्मी-पापा से पूछे ही पिंजड़े का दरवाजा खोल दिया और कहा, "जाओ मिट्ठू तुम भी अपने परिवार के साथ आजादी के मीठे फल खाओ।"

तोता बाहर निकला, पहले अमरूद की डाल पर बैठा और फिर उड़कर पास ही आम के पेड़ की ओर जाने लगा। जहाँ और भी तोते बैठकर आजादी के गीत गा रहे थे। माधव अपने मिट्ठू को उन्मुक्त गगन में उड़ते देख बहुत खुश हुआ। उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे।

उसने धीरे से इतना ही कहा, "जाओ मिट्ठू तुम भी हमारी तरह हर पंद्रह अगस्त को आज़ादी का पर्व अपने साथियों के साथ मनाना। आज से तुम आज़ाद हो मिट्ठू..... तुम आज़ाद हो।" और ऐसा कहते हुए माधव फफककर रो पड़ा।

- बी.एफ. 1, जिंदल स्टील एण्ड पावर लि., रायगढ़-496001 (छतीसगढ़)
मोबाइल : 7999652646

सुबह - सुबह

डॉ. नुसरत नाहीद

फाख़ता मैना गुडमार्निंग करते
तुम्हें उठाते सुबह-सुबह
कौआ कोयल जब लड़ने लगते
तुम्हें उठाते सुबह-सुबह।
बन्दर चाचा भाग के आते
टिफिन तुम्हारा ले जाते।
श्यामा चिड़िया और गौरैय्या
तुम्हें उठाते सुबह-सुबह।
जब तुम उठते दूध पीते
नाश्ता करते सुबह-सुबह।
रिक्शे की जब घंटी बजती
बस्ता उठाते तुम सुबह-सुबह।

स्कूल की घंटी जब बजती
तुम प्रार्थना करते सुबह-सुबह।
दिन जब थोड़ा चढ़ने लगता
भूख तुम्हें जब लगती।
टिफिन उठाकर सब चल देते
नाश्ता करते सुबह-सुबह।
आधा दिन जब चढ़ने लगता
छुट्टी का ऐहसास जगता।
बस्ते अपने तुम बंद करते
लौट के घर को आते तुम।
चिड़िया-चुनगुन फिर मिलजाते
सब मिलकर फिर गाना गाते।

191/102, बाग शेरजंग, नियर सिटी स्टेशन, लखनऊ-226018 मोबाइल : 9956859705

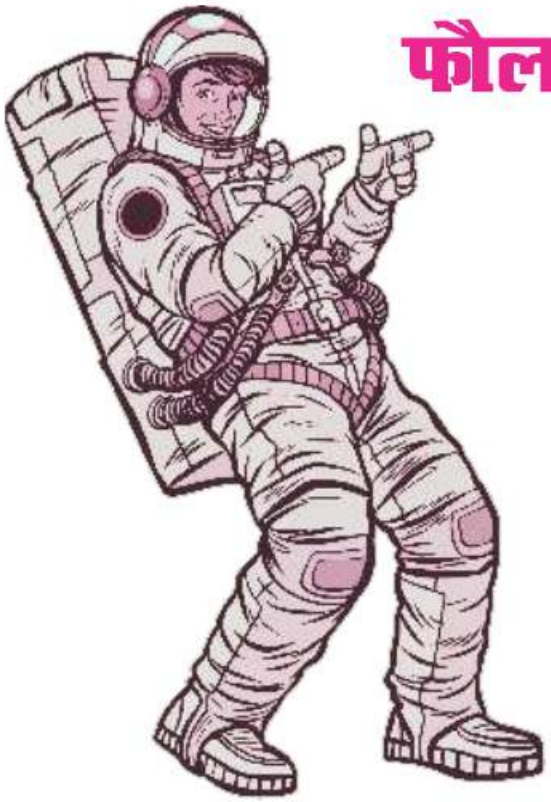

फौलादी गुड़िया

विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

भारतीय अन्तरिक्ष यात्री बचेन्द्री को अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन पर आए पाँचवाँ दिन था। कुछ वर्ष पूर्व तक भारत अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष योजना का सदस्य नहीं था। अमेरिका, रूस, जापान, कनाडा व यूरोपीय संघ के 11 देश इसके सदस्य थे। जब मंगल ग्रह पर मानव बस्ती बसाने की योजना बनने लगी तो इस योजना से जुड़े देशों ने अनुभव किया कि बड़े अन्तरिक्ष अभियान में भारत व चीन को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। चीन ने अपना अलग अन्तरिक्ष स्टेशन बनाने की शुरुआत कर अकेले चलते रहने का संकेत दे दिया। भारत विश्व बंधुत्व की नीति के तहत अन्तरिक्ष स्टेशन की योजना में सम्मिलित हो गया। इसी कारण अपने दो पुरुष साथियों के साथ बचेन्द्री अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन पर गई थी।

रविवार होने के कारण अवकाश का दिन था। वैसे तो अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन में भी सप्ताह में 5 दिन ही कार्य होता है मगर कोई न कोई ऐसी स्थिति बनती ही रहती है कि अन्तरिक्ष यात्रियों को शनिवार को भी कार्य करना पड़ जाता है। उस दिन भी ऐसा ही हुआ था। भोजन, पानी व अन्य कुछ सामान लेकर अन्तरिक्ष शटल अन्तरिक्ष स्टेशन पहुँचा था। अन्य लोगों के साथ बचेन्द्री का भी पूरा दिन शटल को स्टेशन

से जोड़ने, सामान उतारने तथा शटल को पुनः रवाना करने के कार्य में लगभग बीत गया था। शनिवार को सोने जाते समय ही बचेन्द्री ने तय कर लिया था कि रविवार को 8 बजे से पहले वह बिस्तर से बाहर नहीं आएगी।

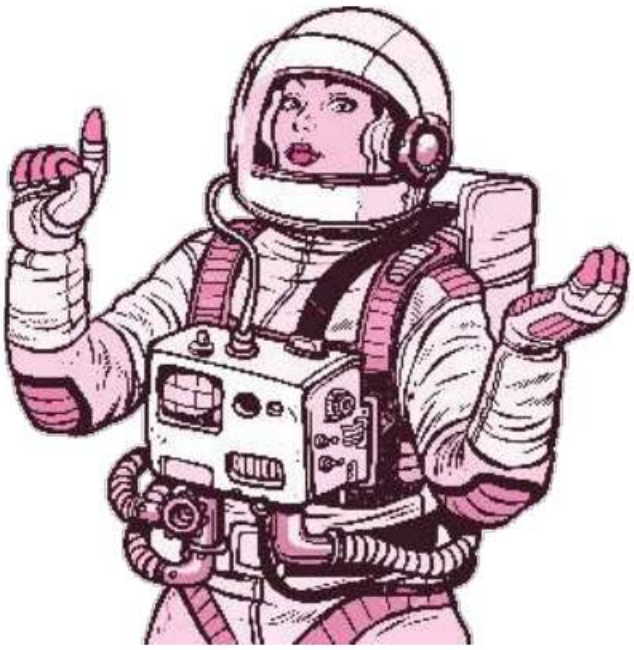

अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन पर बचेन्द्री को बहुत ही नियमित दिनचर्या से गुजरना पड़ता था। वह सुबह छः बजते ही बिस्तर छोड़ देती थी। अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त हो बचेन्द्री नाश्ता करती थीं। नाश्ते की टेबल पर ही स्टेशन प्रभारी व अन्य साथियों के साथ दिन भर की कार्य योजना पर विचार करती। सुबह सवा आठ तक अन्य साथियों के साथ वह भी कार्य पर जुट जाती थी। सबसे पहला कार्य व्यायाम करना होता था। फिर कई प्रकार के प्रयोग, निर्माण कार्य आदि करने होते थे। भोजन के बाद बचेन्द्री कुछ समय विश्राम करती कि फिर काम में जुटने का समय हो जाता था दोपहर के बाद के कार्य में प्रमुख भाग कठिन व्यायाम ही होता था। अन्तरिक्ष में अपने आपको चुस्त-दुरुस्त रखना सबसे बड़ी चुनौती होती है। रात्रि के भोजन के साथ दिन भर के कार्य की समीक्षा की जाती थी। रात्रि नौ बजे वह सोने चली जाती। दिनभर के कार्य से इतनी थकान हो जाती थी कि कभी स्वप्न देखने का अवकाश भी उसे नहीं मिल पाया था। उस रविवार को बचेन्द्री के पास अवकाश ही अवकाश था।

बचेन्द्री का जन्म एक साधारण घर में हुआ था। बचेन्द्री तीन वर्ष की भी नहीं हुई जब उसके पिता एक सड़क दुर्घटना में चल बसे थे। उसी दिन से माँ पिता की जिम्मेदारी भी निभाने लगी थी। बचेन्द्री ने कभी माँ को तकदीर को कोसते नहीं देखा। पिता की मृत्यु के बाद माँ घर में बैठकर मुहल्ले भर के कपड़े सिलने लगी थी। उससे इतना मिल जाता कि उनके तीन सदस्यों के परिवार का काम चल जाता था। बचेन्द्री का एक भाई भी था। भाई ने तो पिता को कभी देखा ही नहीं था। पिता की मृत्यु के एक माह बाद उसका जन्म हुआ था। बचेन्द्री मुहल्ले के सरकारी स्कूल में पढ़ने लगी थी। बचेन्द्री की पढ़ने में बहुत रुचि थी। माँ ने उसे एक ही बात सिखाई कि दृढ़ता से उद्देश्य पाने की कोशिश में लगे रहो। बचेन्द्री स्कूल में सदैव प्रथम स्थान प्राप्त करती रही थी।

बचेन्द्री बिस्तर छोड़ और चाय लेकर पृथ्वी की ओर खुलने वाली खिड़की के पास आ बैठी।

पृथ्वी के अनेक मनोरम दृश्य उसके सामने थे। पृथ्वी की ओर देखते हुए उसे माँ की याद आ गई। माँ ने कभी उसे कुछ बनने का लक्ष्य नहीं दिया था। माँ ने सदैव एक ही शिक्षा दी कि ईमानदारी व पूर्ण क्षमता से कार्य करो। तुम्हें कभी सफलता के पीछे नहीं दौड़ना पड़ेगा अपितु सफलता तुम्हारे पीछे दौड़ेगी। आज बचेन्द्री को लग रहा था कि माँ की बात कितनी सही निकली। बचेन्द्री लोगों के संघर्ष की कथाएं सुनती तो चकित रह जाती। क्योंकि बचेन्द्री को ऐसा कुछ नहीं करना पड़ा जिसे लोग संघर्ष कहते हैं। बचेन्द्री सोच रही थी कि खुल जा सिम-सिम की कहानी उसके जीवन पर सही उतरी है। वह जिधर भी बढ़ी उधर उसे द्वार खुला मिला। उस दिन तो पूरा अन्तरिक्ष ही बचेन्द्री के लिए खुला था। वह एक दिन में दुनिया के 18 चक्कर लगा रही थी।

चाय का एक बड़ा घूंट भरने के बाद बचेन्द्री ने अपने अन्तरिक्ष कक्ष में दृष्टि डाली। सामने की दीवार पर प्रथम भारतीय अन्तरिक्षयात्री राकेश शर्मा की तस्वीर टंगी थी। तस्वीर को देखकर बचेन्द्री को भारत में हुई अन्तरिक्ष विज्ञान के विकास की कहानी याद आ गई। तेजी से हुए विकास को याद कर बचेन्द्री अभिभूत हो गई। बचेन्द्री को याद आया कि भारतीय वायुसेना के अधिकारी राकेश शर्मा अप्रैल 1984 में अन्तरिक्ष की ओर उड़े थे। लगभग 8 दिन अन्तरिक्ष में रह कर वह सकुशल पृथ्वी पर लौट आये थे। बचेन्द्री की प्रसन्नता का कारण यह नहीं था कि वह भी राकेश शर्मा की तरह अन्तरिक्ष में चक्कर लगा रही थी। बचेन्द्री राकेश शर्मा व अपनी यात्रा के अन्तर के कारण प्रसन्न थी। राकेश शर्मा रूसी अन्तरिक्षयान सोयूज में बैठ कर रूसी कॉस्मोनॉट के साथ अन्तरिक्ष में गये थे। अन्तरिक्ष में रूसी अन्तरिक्ष कक्ष सल्यूट-7 में रूसियों के मेहमान की तरह रहे थे। बचेन्द्री भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन के यान आकाशदूत में बैठ कर अन्तरिक्ष में आयी थी। अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन में उसे किसी अन्य देश के कक्ष में मेहमान नहीं बनना पड़ा था, बचेन्द्री भारत द्वारा स्थापित वायुयुक्त कक्ष त्रिशंकु में आराम से रही थी। बचेन्द्री को गर्व था कि

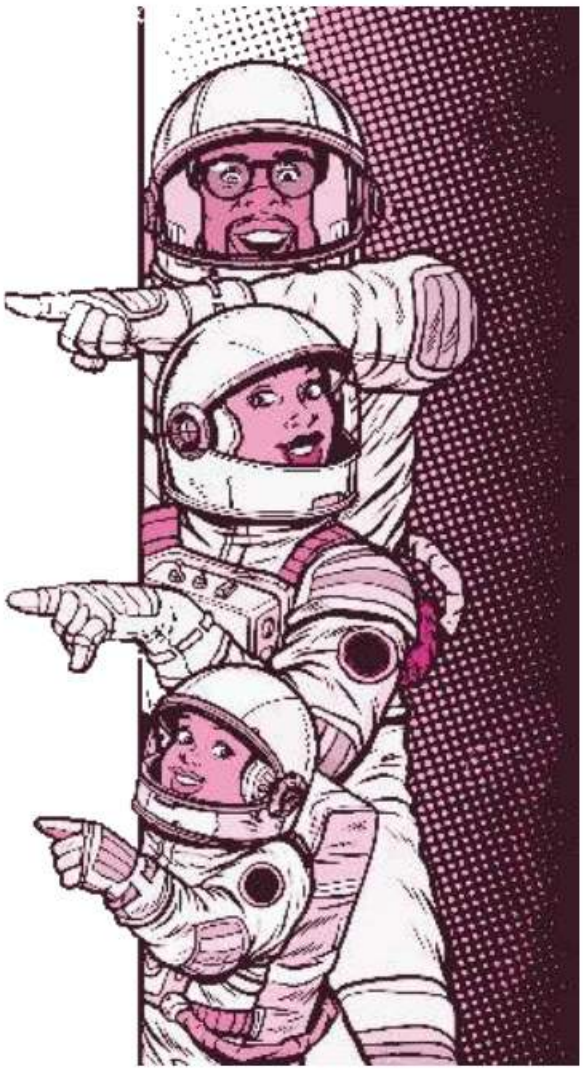

सबसे पीछे अन्तरिक्ष की ओर कदम बढ़ाने वाला भारत आज सबके बराबर चल रहा था।

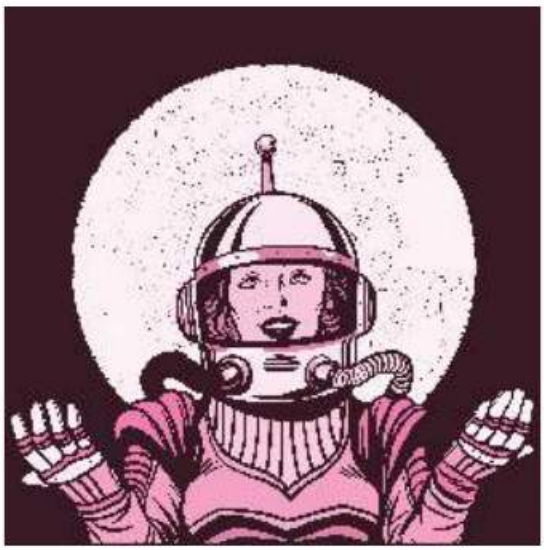

पृथ्वी से लगभग 400 किलोमीटर दूर, मानव द्वारा निर्मित अद्‌भुत आवास अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन में बैठ कर पृथ्वी को निहारना बचेन्द्री के लिए एक अद्‌भुत अनुभव था। पृथ्वी के गुरुत्वीय प्रभाव से मुक्त क्षेत्र में विचरण करने में हर क्षण जीवन का खतरा बना रहता है मगर मानवता के उत्कर्ष के लिए उस खतरे को उठाने में बहुत आनन्द है। यही कारण है कि अन्तरिक्ष उड़ानों के दौरान दर्जनों लोगों को मारे जाने के बावजूद अन्तरिक्ष में जाने के इच्छुक नौजवानों की कतार कभी छोटी नहीं हुई थी।

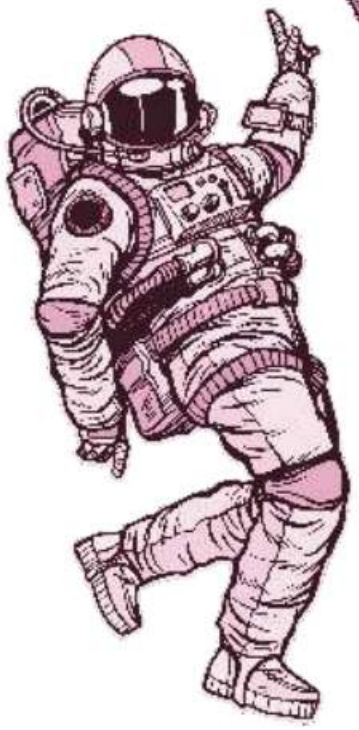

राकेश शर्मा, कल्पना चावला व सुनीता विलयम्स के कारण भारत के अन्य बच्चों की तरह बचेन्द्री भी अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन से परिचित हुई थी। उस परिचय के समय बचेन्द्री ने यह कल्पना नहीं की थी कि बहुत जल्दी ही वह भी उन्हीं की तरह अन्तरिक्ष में विचरण करेगी। अमेरिकी महिला अन्तरिक्ष यात्री डॉ. मेरी एलन वेबर के अनुभव पढ़ कर बचेन्द्री को लगा कि वह भी अन्तरिक्ष में जा सकती है। दृढ़ निश्चय व ईमानदार प्रयास के कारण अवसर दौड़कर बचेन्द्री के सामने आने लगे थे। बचेन्द्री ने ज्योहि इंजीनियर की उपाधि प्राप्त की भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अन्तरिक्ष में जाने के इच्छुक युवाओं से प्रार्थना पत्र आमंत्रित किए थे। बचेन्द्री ने आवेदन किया, कठोर चयन प्रक्रिया को बचेन्द्री ने पार कर लिया था। कठिन प्रशिक्षण को बचेन्द्री ने जिस सहजता से पूरा किया उसे देख प्रशिक्षक बचेन्द्री को "फौलादी गुड़िया" कहने लगे थे।

उन पाँच दिनों में बचेन्द्री पृथ्वी की 90 परिक्रमा कर चुकी थी। कार्य

में व्यस्त रहने के कारण बाहर के दृश्यों की सुन्दरता रस तब तक नहीं ले सकी थी। जब फुर्सत मिली तो उसे लगा कि जिस पृथ्वी को हम इतना बड़ा मानते हैं वह अनन्त महासागर में एक छोटे द्वीप से अधिक महत्व नहीं रखती। वायुमण्डल व जीवन की उपस्थिति ने पृथ्वी के पृष्ठ पर जो रंग भरे हैं वैसे रंग अन्तरिक्ष में अन्यत्र दिखाई नहीं देते। बचेन्द्री जब बच्ची थी तब ऊपर से गुजरते बादलों के कारण उभरते धूप-छांव के दृश्य उसे बहुत रोमांचित करते थे। कुछ वैसे ही दृश्य उस दिन बचेन्द्री के सामने बार-बार उपस्थित हो रहे थे। पृथ्वी की हर परिक्रमा के आधे भाग में उसे रात, आधे में दिन का दृश्य दिखाई दे रहा था। बचेन्द्री यह देख कर भी रोमांचित थी कि दिन वाले भाग से गुजरने पर जो पृथ्वी निर्जन दिखाई देती है, वही पृथ्वी रात वाले भाग में जगमगाते प्रकाश पुंजों के कारण मानवता की महानता का बखान करने लगती है।

माँ से बात करने का समय समीप आने के साथ ही बचेन्द्री की दिल की धड़कन बढ़ने लगी थी। बचेन्द्री की पृथ्वी की 93 वीं परिक्रमा के समय अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन के भारत पर से गुजरते समय 10 मिनट के संयोजन समय के लिए एक स्वयं सेवी संस्था ने माँ व स्थानीय लोगों से वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग की व्यवस्था की थी। "हेलो हेलो पाली राजस्थान हियर"

"....."

"हेलो हेलो पाली राजस्थान हियर"

"मैं बचेन्द्री बोल रही हूँ, माँ आप कैसी हैं?" स्क्रीन पर माँ का चेहरा देखते ही खुशी से चीख पड़ी बचेन्द्री।

"मैं बहुत खुश हूँ, जब बहादुर बेटी अन्तरिक्ष में विचरण कर रही हो तब माँ खुश होने के अतिरिक्त कर भी क्या सकती है? तुम बताओ अन्तरिक्ष में कैसी गुजर रही है?" माँ ने पूछा। खुशी के कारण माँ का चेहरा गुलाबी आभा से दमकने लगा था।

"माँ आज तो आप बहुत सुन्दर लग रही हो" बचेन्द्री ने कहा।

"अरे वहाँ अन्तरिक्ष में भी तुझे हँसी-मजाक सूझ रहा है। देख नहीं रही यहाँ कितने लोग जमा है। क्या कहेंगे? चल बता अन्तरिक्ष से भारत कैसा दिखाई देता है?" माँ ने बात बदलने की दृष्टि से कहा।

"माँ आज तो आप घबरा गई। आपने वही प्रश्न पूछ लिया जो पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने

राकेश शर्मा से पूछा था। जवाब में राकेश जी ने पहले से तय पंक्ति- 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा', सुनाई थी। माँ, भारत से मुझे भी बहुत प्रेम है, मगर सच कहूं तो यहाँ से किसी भी देश की सीमा दिखाई नहीं देती। पूरी पृथ्वी एक इकाई दिखाई देती है।" बचेन्द्री ने कहा। इस पर उसे तालियों की आवाज सुनाई दी। बचेन्द्री को लगा उसका जवाब वहां उपस्थित कई लोगों को पसन्द आया था।

"अच्छा बता तेरी जन्मतिथि क्या है।" माँ ने फिर विषय बदल दिया।

"23 मई 1984, माँ इस समय यह प्रश्न क्यों पूछ रही हो?" बचेन्द्री ने आश्चर्य से पूछा।

"इस प्रश्न को पूछने का सही समय आने का इन्तजार मैं इतने वर्षों से करती रही हूँ। आज वह समय आ गया है। इस तिथि को बचेन्द्रीपाल ने हिमालय की चोटी पर चढ़ने में सफलता पायी थी। उसने हिमालय पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला का खिताब प्राप्त किया था। उसी दिन तू पैदा हुई तो मैंने तेरा नाम बचेन्द्री इस इच्छा से रखा कि तू भी कभी ऐसा ही कुछ कर दिखायेगी। तेरे पर मानसिक दबाव नहीं पड़े इस कारण यह बात मैंने तुझसे कभी नहीं बतायी। तूने अन्तरिक्ष में जाने वाली भारतीय महिला बनकर अपना मुकाम प्राप्त कर लिया है। तेरे पापा को यह बात पता थी। आज उनसे यह बात नहीं कह सकती इसलिए तुझसे कर रही हूँ।" माँ ने कुछ भावुक होते हुए कहा।

"माँ तुम सचमुच महान हो" माँ की बात सुन फौलादी गुड़िया की आँखें भीग गयीं थी। वह एक वाक्य भी बड़ी मुश्किल से बोल पायी थी। इतने में यान से सम्पर्क कट गया। अन्तरिक्ष स्टेशन शायद सम्पर्क सीमा से आगे बढ़ गया था।

- 2 तिलक नगर, पाली,
राजस्थान-306401

आत्मविभोर

युगल किशोर शर्मा

जीवन पथ को आलोकित कर
सभी कलुष को शीघ्र मिटा दो,
हे प्रभु! तुझमें अपार शक्ति है
परम भक्ति का योग जुटा दो।

मैं अभक्त विषयों का लोभी
था पहले अब ज्ञान हुआ है,
हे प्रभु! तुम्हीं ज्ञान प्रदाता
ज्ञानी प्रभु का गान हुआ है।

मैं बालक प्रभु गान करुँगा
जीवन प्रभु को दूँगा दान,
यही आंतरिक इच्छा है प्रभु
मुझमें भरे नहीं अभिमान।

जीवन प्रभु के यान में बैठा
देख रहा प्रभु युगल किशोर,
नित्य प्रभु से करे प्रार्थना
'स्वयं' हुआ है आत्मविभोर।

- अकरौंजा ग्राम निवासी,
पत्रालय-तुर्क तेलपा, वाया-गोह-824203
जिला-अरवल (बिहार) मोबाइल : 7870135582

उन राहों पर

डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

लेकर आशा की मशाल नित,
प्रगति पथ पर बढ़ना है
पा न सके जो राहें अब तक
उन राहों पर चलना है

तुम सागर हो तुम्हीं हिमालय
तुमसे कांपे मृत्यु, शोक, भय
शान तुम्हारी कभी नहीं हो क्षय
गाए जग, इतिहास सदा जय

बनकर गाँधी, बोस, जवाहर
जग को राह दिखानी है
भारत माँ के यश-वैभव की
गढ़नी नई कहानी है

हो न सकी जो आशा पूरी
छूट गयी जो राह अधूरी
जीवन दे, वह करनी पूरी
रहने कहीं न पाये दूरी

सोना, खोना काम नहीं अब,
चन्दा सा नित बढ़ना है
जहाँ पहुँच इतिहास सका ना
उन राहों पर चढ़ना है।

157, गढ़ विहार, फेज-1, मोहकमपुर, देहरादून-248005 मोबाइल : 9411173339

हमारा स्वभाव

नमन गोगिया

गीता में भगवान श्रीकृष्ण 'सतत् अभ्यास' पर बल देते हैं। स्ट्डी टीम के मुख्य एडम जे. करॉसे व उनके साथी ने अपनी रिसर्च के बाद निष्कर्ष निकाले और कहा, ''हम चाहें तो 'सतत् अभ्यास' के जरिए अपने स्वभाव में अभूतपूर्ण बदलाव ला सकते हैं। वो स्वभाव जिस की वजह से आपके सम्बन्ध अपनी पति/पत्नी, ऑफिस क्लीग या मित्रों से बिगड़ रहे थे ! मैंने उनमें बदलाव किया और मेरे जीवन में आश्चर्यजनक परिणाम आये।'' यह कहना कि योगेश त्रिपाठी का जो एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में शीर्ष पद पर हैं।

ज़िंदगी तो एक खूबसूरत फलसफ़ा है और उसका हर पल सुखमय तब बनता है, जब आप अपने 'स्वभाव' से दूसरों के मन जीतने में सहज़ हो जाते हैं। फिर क्यों दूसरों की ख़ामियों पर नज़र रखें? बल्कि अपनी 'ख़ामियों' को अपने स्वभाव एवं नज़रिये से बदल दूसरों की सदा मदद करें।

तुलना न करें

याद रखें तुलना कभी सुख का कारण नहीं बन सकती। हम दूसरों की 'पर्सनेल्ट्री',

'कार्यशैली' एवं 'स्वभाव' को देखकर तुलना करने लग जाते हैं। कनाडा की कॉनकॉर्डिया यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक का मानना है, ''अनुकरण से मौलिकता ख़त्म हो जाती है।'' अपनी ज़िन्दगी को यू मनोवैज्ञानिक मौलिक एवं उपयोगी मानते हैं। आगे कहते हैं, ''ज़िन्दगी का तो हर पल आश्चर्य, गुदगुदाने एवं अद्‌भुत तब बनता है, जब किसी भी काम को डूबकर किया जाए! आप बड़े-से-बड़ा या छोटे-से-छोटा कार्य को अपना 100 पर्सेन्ट दें। इसका सतत् अभ्यास केवल 'मेहनत' से आता है इसके लिए चाहें खुद को बदलना पड़े। फिर देखिए चाहे आश्चर्यजनक ढंग से आप के स्वभाव में परिवर्तन आयेगा। अब आप को क्रोध आयेगा ही नहीं, चाहे दूसरा कितना भी आपको आक्रोश में लाने का प्रयास करें।

''कठिन और विपरीत स्थितियों में मुझे संतुलित रहना है, मुझे सबका हृदय जीतना है'', यह कहना है कुमुदिनी मेहरा का जो साउथ दिल्ली के एक सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में उप प्रधानाचार्य हैं। 'क्रोध' और 'अहंकार' पर काफी हद तक मैंने जीत पा ली है। मैंने पाया मेरा घर मंदिर बन गया। चारों ओर वातावरण में आश्चर्यजनक बदलाव आ गया। सारा माहौल प्रेममय हो गया। आमतौर पर हम आवेश में आकर सुख के पलों को भी दुःख में बदल देते हैं। इसमें किसी और को कोई दोष नहीं केवल अपने स्वभाव में बदलाव लाना है।

कई बार कई लोग अपने 'भाग्य', 'नियति' या कर्मों को दोष मानते हैं। यह उनकी भूल है।